बुढ़ियों के कारनामे–1

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Budhiyon Ke Karname-1 (Adventures of Old Women-1)
Cover Page picture : An Old Woman
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
बुढ़ियों के कारनामे–1 5
1 तोता 7
2 सात पोशाकों वाली सुन्दरी 20
3 वर्मवुड 36
4 स्पेन का राजा और अंग्रेज मीलौर्ड 54
5 रत्न जड़ा जूता 74
6 कप्तान और जनरल 87
7 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा 97

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

बुढ़ियों के कारनामे–1

प्राचीन समय में ख़ास करके भारत में बुढ़ियें घर घर जा कर बहुत धोख़ाधड़ी के काम करती थीं। किसी बहू बेटी का गहना चुरा लेती थीं। किसी के घर में किसी बाहर के आदमी को घुसा देती थीं। किसी बहू बेटी के दूसरे आदमियों के लिये सन्देश लाती ले जाती थीं आदि आदि। उन दिनों ऐसी स्त्रियों को कुटनी बोला करते थे। आजकल ऐसी स्त्रियॉ कम पायी जाती हैं क्योंकि आजकल स्त्रियॉ ख़ुद ही बाहर निकलने लगी हैं पर पुराने समय में ऐसी स्त्रियॉ बहुत पायी जाती थीं।

आज यहॉ ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं जिनमें ऐसी ही बुढ़ियों के कुछ कारनामे दिये गये हैं। इनमें बुढ़ियों ने ऐसे काफी काम किये हैं और काफी गलतफहमियॉ भी पैदा की हैं जिनसे लोगों को बहुत तकलीफें उठानी पड़ी हैं। पर आश्चर्यजनक रूप से ये सब लोक कथाऐं यूरोप महाद्वीप की हैं।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख़ देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 तोता[1]

बुढ़ियों के कारनामों की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक शहर में एक व्यापारी रहता था। उसके एक बेटी थी।

एक बार उस व्यापारी को अपने व्यापार के काम से कहीं बाहर जाना था पर वह अपनी उस बेटी को अकेले छोड़ने से डरता था क्योंकि एक राजा की नजर उसकी बेटी पर थी और वह उस राजा से अपनी बेटी की शादी करना नहीं चाहता था।

जाना जरूरी था सो जाने से पहले उसने अपनी बेटी से कहा — "बिटिया, मैं ज़रा अपने धन्धे के काम से बाहर जा रहा हूँ पर तुम मुझसे वायदा करो कि जब तक मैं वापस नहीं आता तब तक न तो

तुम घर के दरवाजे से बाहर झाँकोगी और न ही किसी और को घर के अन्दर झाँकने दोगी।"

वह बोली — "पिता जी, मुझे घर में बिल्कुल अकेले रहते हुए बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है। क्या मैं एक तोता[2] भी अपने साथ के लिये नहीं रख सकती?"

---

[1] The Parrot (Story No 15) – a folktale from Monferrato area, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[2] Translated for the word "Parrot". Parrots are of many colors and sizes. Parrots are famous for their talking qualities. A picture of Indian green parrot is given above.

व्यापारी जो बेचारा अपनी बेटी के लिये ही जीता था तुरन्त बाजार गया और अपनी बेटी के लिये एक तोता खरीद लाया। उसको एक बूढ़ा मिल गया था जिसने उस तोते को एक गीत के बदले में उसे बेच दिया।

वह उस तोते को अपनी बेटी के पास ले गया और उस तोते को उसको दे कर और आखीर तक उसको उपदेश देने के बाद अपने काम पर चला गया।

जैसे ही वह व्यापारी अपने घर से बाहर गया तो उस राजा ने जो उससे शादी करना चाहता था उस लड़की से मिलने की तरकीब सोचनी शुरू कर दी। उसने एक बुढ़िया को बुलाया और उसको उस लड़की के लिये एक चिट्ठी दे कर उस लड़की के घर भेजा।

इस बीच उस लड़की ने तोते से बात करना शुरू कर दिया — "मुझसे बात करो ओ तोते, मुझसे बात करो न।"

तोता बोला — "अच्छा तो लो सुनो, मैं तुमको एक बड़ी अच्छी कहानी सुनाता हूँ —

"एक बार की बात है कि एक राजा था जिसकी एक ही बेटी थी। वह उसकी अकेली बच्ची थी। उसके न तो कोई और बेटा था और न ही और कोई बेटी ही थी।

उसके साथ कोई खेलने वाला भी नहीं था इसलिये उसके माता पिता ने उसके लिये एक इतनी बड़ी गुड़िया बनवा दी जितनी बड़ी

वह खुद थी। उन्होंने उसको वैसे ही कपड़े भी पहना दिये जैसे उनकी बेटी पहनती थी।

अब जहॉ भी वह राजकुमारी जाती उसकी गुड़िया भी उसके साथ ही जाती। दोनों को एक साथ देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि उनमें से कौन सी राजकुमारी थी और कौन सी गुड़िया थी।

एक दिन राजा अपनी बेटी और उसकी गुड़िया को ले कर अपनी गाड़ी में जंगल में से जा रहा था कि रास्ते में दुश्मनों ने उसकी गाड़ी पर हमला कर दिया।

राजा मारा गया और दुश्मन राजा की बेटी को ले कर भाग गये पर गुड़िया को वे वहीं छोड़ गये। उसको नहीं ले गये सो वह वहीं छोड़ी हुई गाड़ी में ही पड़ी रही।

लड़की खूब रोयी खूब चिल्लायी तो दुश्मनों ने उसको भी वहीं छोड़ दिया और भाग गये। वह लड़की बेचारी अकेली जंगल में भटकती रही। भटकते भटकते वह एक रानी के दरबार में पहुॅच गयी और वहॉ जा कर वह उस रानी की नौकरानी बन गयी।

वह लड़की बहुत होशियार थी सो रानी उसको बहुत प्यार करती थी। यह देख कर रानी के दूसरे नौकर उससे जलने लगे और उस लड़की को रानी की नजरों में नीचे गिराने के लिये जाल बिछाने लगे।

उन्होंने उस लड़की से कहा — "तुमको तो मालूम है कि रानी जी तुमको बहुत प्यार करती हैं और तुमको हर बात बता देती हैं पर एक बात ऐसी है कि जो हमको मालूम है और तुमको नहीं मालूम।"

लड़की ने पूछा — "ऐसी कौन सी बात है?"

नौकरों ने तब उसको बताया — "वह बात यह है कि रानी के एक बेटा था जो मर गया है।"

यह सुन कर वह लड़की रानी के पास गयी और बोली — "रानी जी क्या यह सच है कि आपके एक बेटा था और वह मर गया है?"

यह सुन कर रानी तो बेहोश होते होते बची। भगवान जाने यह सच्चाई उस लड़की को किसने बतायी क्योंकि केवल यह कहने की सजा कि "रानी का बेटा मर गया था" मौत थी। इसलिये उस लड़की को भी मरने की सजा सुनायी जानी चाहिये थी।

पर रानी को उस लड़की पर दया आ गयी और उसने उसको बजाय मौत की सजा सुनाने के एक तहखाने में बन्द कर दिया।

तहखाने में बन्द होने के बाद वह लड़की बहुत ही उदास और नाउम्मीद हो गयी। उसका खाना पीना छूट गया और वह रात रात भर रोने लगी।

एक दिन आधी रात को जब वह रो रही थी तो उसने दरवाजे की कुंडी खिसकने की आवाज सुनी और पॉच आदमी अन्दर आते देखे। उन पॉच आदमियों में से चार आदमी जादूगर थे और पॉचवॉ

रानी का बेटा था। रानी के बेटे को उन जादूगरों ने वहीं उसी रानी के तहखाने में कैद कर रखा था जिसको वे इस समय घुमाने ले जा रहे थे।"

उसी समय उस लड़की की नौकरानी ने तोते की वह कहानी बीच में ही रोक दी। वह उस लड़की के लिये किसी की चिट्ठी ले कर आयी थी।

असल में वह चिट्ठी उसी राजा की थी जो उस लड़की से बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था। और उस लड़की का पिता भी उसी के डर से अपनी बेटी को अकेला छोड़ना नहीं चाहता था। उस राजा ने किसी तरह व्यापारी की उस लड़की तक पहुँचने की तरकीब निकाल ही ली थी।

पर लड़की को तो उस तोते की कहानी बहुत अच्छी लग रही थी और वह यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि उस कहानी में आगे क्या हुआ क्योंकि अभी तो उसमें उस कहानी का सबसे अच्छा हिस्सा आने वाला था।

वह अपनी नौकरानी से बोली — "मैं कोई चिट्ठी नहीं लूँगी जब तक मेरे पिता जी नहीं आ जाते। तोते, तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

वह नौकरानी वह चिट्ठी वहाँ से वापस ले गयी और तोते ने अपनी कहानी फिर से शुरू कर दी —

"सुबह को जेलर ने देखा कि उस लड़की ने तो कुछ खाया ही नहीं है। यह बात उसने जा कर रानी से कही।

यह सुन कर रानी ने उस लड़की को बुला भेजा तो लड़की ने उसे बताया कि उसका बेटा तो ज़िन्दा था और वह भी वहीं उसी तहखाने में ही चार जादूगरों का कैदी था। वे उसको हर रात घुमाने ले जाते थे।

रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई। उसने तुरन्त ही अपने **12** सिपाही कोबार[3] ले कर तहखाने में भेज दिये। उन्होंने उन चारों जादूगरों को मार डाला और रानी के बेटे को उनसे छुड़ा कर ले आये।

रानी अपना बेटा पा कर बहुत खुश हुई। उसके बाद रानी ने उस लड़की की शादी अपने बेटे से कर देने के लिये सोचा क्योंकि उसी ने तो उसको ज़िन्दा किया था और जादूगरों के हाथ से बचाया था।"

तभी उस लड़की की नौकरानी ने फिर से दरवाजा खटखटाया और ज़ोर दिया कि उसको वह चिट्ठी पढ़ लेनी चाहिये।

लड़की बोली — "ठीक है ठीक है। अब जब यह कहानी खत्म हो ही गयी है तो मैं यह चिट्ठी पढ़ सकती हूँ।"

पर तभी तोता जल्दी से बोला — "पर यह कहानी अभी खत्म नहीं हुई अभी तो कहानी और बची है। तुम सुनो तो।"

[3] Crowbar – a kind of iron rod with a turned end – see its picture above.

वह आगे बोला — "लेकिन वह लड़की उस रानी के बेटे से शादी नहीं करना चाहती थी। उसने रानी से उसके बदले में धन मॉगा और एक आदमी के कपड़े मॉगे।

रानी ने जब उसको धन और कपड़े दोनों दे दिये तो वह उस राज्य को छोड़ कर वहॉ से दूसरे शहर चल दी।

इस दूसरे शहर के राजा का बेटा बीमार था और कोई डाक्टर उसको ठीक नहीं कर पा रहा था। उसकी बीमारी यह थी कि आधी रात से ले कर सुबह तक वह ऐसा हो जाता था जैसे किसी भूत प्रेत या आत्मा ने उसके ऊपर अपना असर कर रखा हो।

यह लड़की आदमी के वेश में वहॉ गयी और उन लोगों से कहा कि वह डाक्टर है और किसी दूसरे देश से आया है। वह राजा के बेटे का इलाज करना चाहता है और इस इलाज के लिये वह उस राजा के नौजवान बेटे के साथ एक रात अकेला रहना चाहता है।

कोई राजा के बेटे का इलाज कर दे इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी सो उसको राजा के बेटे के साथ एक रात अकेले रहने की इजाज़त दे दी गयी।

सबसे पहले तो उस लड़की ने राजा के बेटे के पलंग के नीचे देखा तो वहॉ उसको एक चोर दरवाजा दिखायी दिया। उसने वह चोर दरवाजा खोला और उसके अन्दर चली गयी। वहॉ से वह एक बरामदे में निकल आयी थी। बरामदे के दूसरे छोर पर उसको एक जलता हुआ लैम्प दिखायी दिया।"

उसी समय नौकरानी ने फिर से दरवाजा खटखटाया और उस लड़की को बताया कि एक बुढ़िया उस लड़की से मिलना चाहती थी।

वह बुढ़िया कहती थी कि वह उस लड़की की चाची थी। पर असल में यह बुढ़िया उस लड़की की कोई चाची वाची नहीं थी यह तो उसी राजा की भेजी हुई बुढ़िया थी जो उसको बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था।

पर वह लड़की तो कहानी सुनने में इतनी मस्त थी कि उसने अपनी नौकरानी से कहा कि वह अभी इस समय किसी बुढ़िया वुढ़िया से मिलना नहीं चाहती और फिर तोते से बोली — "तोते, तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

तोते ने अपनी कहानी फिर आगे बढ़ायी — "सो वह लड़की उस बरामदे में आगे बढ़ती गयी, बढ़ती गयी और लैम्प के पास तक पहुँच गयी। वहाँ जा कर उसने देखा कि एक बुढ़िया आग पर एक बरतन में राजकुमार का दिल उबाल रही है।

ऐसा वह इसलिये कर रही थी क्योंकि राजा ने उसके लड़कों को फाँसी दिलवा दी थी। लड़की ने उस बरतन से राजकुमार का दिल निकाल लिया और उसको राजकुमार के पास खाने के लिये ले गयी। जैसे ही राजकुमार ने अपना दिल खाया राजकुमार ठीक हो गया।

राजा को बाद में पता चला कि वह कोई लड़का नहीं था बल्कि एक लड़की थी।

राजा बोला — "तुमने मेरे बेटे को ठीक किया है इसलिये अपना आधा राज्य मैं तुमको देता हूँ पर तुम क्योंकि एक लड़की हो इसलिये तुम मेरे बेटे से शादी कर लो और रानी बन जाओ।"

व्यापारी की लड़की बोली — "यह तो बड़ी अच्छी कहानी है। अब तो कहानी खत्म हो गयी अब मैं उस स्त्री से मिल सकती हूँ जो कहती है कि वह मेरी चाची है।"

पर तोता फिर बोला — "पर अभी यह कहानी खत्म नहीं हुई। अभी तो कहानी और है। तुम सुनती रहो।"

और तोते ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "सो उस लड़की ने इस राजा के बेटे से भी शादी नहीं की और दूसरे शहर चल दी।

इस शहर के राजा का बेटा भी किसी के जादू के असर में था। वह बोलता नहीं था। वहाँ भी उसने उस लड़के के साथ एक रात अकेले रहने की इजाज़त माँगी जो उसको तुरन्त ही दे दी गयी।

रात को वह उस लड़के के पलंग के नीचे छिप गयी। आधी रात को उसने खिड़की के रास्ते से दो जादूगरनियाँ आती देखीं। उन्होंने उस लड़के के मुँह से पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला तो वह बोलने लगा। पर जाने से पहले वे जादूगरनियाँ उस पत्थर के टुकड़े को फिर से उस लड़के के मुँह में रख गयीं तो वह फिर नहीं बोल सका।"

तभी किसी ने फिर दरवाजा खटखटाया पर व्यापारी की लड़की अपनी कहानी सुनने में इतनी मस्त थी कि उसने उस खटखटाहट की आवाज ही नहीं सुनी और उस तोते ने अपनी कहानी जारी रखी — "उस लड़की ने फिर से राजा से उसके बेटे के कमरे में रहने की इजाज़त माँगी जो उसको मिल गयी।

अगली रात जब वे जादूगरनियाँ दोबारा आयीं और उन्होंने वह पत्थर का टुकड़ा राजा के बेटे के मुँह से निकाल कर उसके बिस्तर पर रखा तो उस लड़की ने उसके बिस्तर की चादर को एक झटका दिया और वह पत्थर उस राजकुमार के बिस्तर से नीचे गिर गया।

लड़की ने हाथ बढ़ा कर उस पत्थर को उठा लिया और अपनी जेब में रख लिया। सुबह को जब वे जादूगरनियाँ जाने लगीं और उन्होंने उस पत्थर के टुकड़े को राजा के बेटे के मुँह में रखने के लिये खोजा तो उनको वह पत्थर ही नहीं मिला। पत्थर न पा कर वे वहाँ से भाग लीं।

अगले दिन राजकुमार ठीक था तो उस शहर वालों ने उस लड़के का नाम ही डाक्टर रख दिया।"

दरवाजे पर खटखटाहट चालू रही और व्यापारी की लड़की "अन्दर आ जाओ" कहने ही वाली थी कि उसने पहले तोते से पूछा — "अभी यह कहानी और है या खत्म हो गयी?"

तोता बोला — "यह कहानी तो अभी और है। तुम सुनती रहो। पर वह लड़की वहॉ डाक्टर के रूप में भी रुकने के लिये तैयार नहीं थी सो वह एक और शहर चली गयी।

इस शहर में जा कर उसने सुना कि वहॉ का राजा पागल हो गया है। वह पागल इसलिये हो गया था कि जंगल में उसको एक गाड़ी में पड़ी एक गुड़िया मिल गयी थी और वह उस गुड़िया के प्यार में पागल था।

बस वह हमेशा ही अपने कमरे में बैठा रहता और उस गुड़िया को देखता रहता और रोता रहता। रोता वह इसलिये था कि वह ज़िन्दा नहीं थी। वह लड़की राजा के सामने गयी तभी भी वह उस गुड़िया को लिये बैठा था और रो रहा था।

उसको देखते ही वह बोली — "अरे यह तो मेरी गुड़िया है। यह आपको कहॉ से मिली?"

और राजा उसको देखते ही बोला — "यह तो मेरी दुलहिन है।"

राजा इस बात पर चकित था कि उन दोनों की सूरतें कितनी मिलती जुलती थीं और किस तरीके से वह उसको देखते ही पहचान गया।"

दरवाजे पर फिर से खटखटाहट हुई तो अबकी बार तोता बहुत परेशान हो गया क्योंकि वह अपनी कहानी को इससे आगे नहीं बढ़ा पा रहा था पर फिर भी वह बोला — "एक मिनट, एक मिनट। बस

ज़रा सी कहानी और बची है वह हम और खत्म कर लें फिर तुम अपनी चाची से मिल लेना।"

पर उसको उस कहानी को आगे बढ़ाने का कोई मसाला ही नहीं मिल रहा था। अब वह उस कहानी को आगे कैसे बढ़ाये।

तभी किसी ने दरवाजा फिर से खटखटाया और आवाज लगायी — "दरवाजा खोलो बेटी, दरवाजा खोलो। मैं तुम्हारा पिता।"

सो तोता बोला — "ठीक है, बस तुम्हारे पिता जी आ गये। अब हम यह कहानी यहीं खत्म करते है। राजा ने उस लड़की से शादी कर ली और वे लोग खुशी खुशी रहने लगे।"

कहानी खत्म हो गयी थी सो वह लड़की तुरन्त ही दरवाजा खोलने चली गयी और दरवाजा खोल कर अपने पिता से लिपट गयी।

पिता बोला — "मुझे लग रहा है कि आज तुम मेरा कहा मान कर घर में ही रहीं। और हॉ तुम्हारा तोता कैसा है?"

"बहुत अच्छा है पिता जी।"

सो वे दोनों तोते को देखने अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि तोता तो वहॉ कहीं नहीं था बल्कि उस तोते की जगह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान खड़ा था।

वह नौजवान उस लड़की के पिता से बोला — "मुझे माफ कीजियेगा जनाब। मैं एक राजा हूॅ जिसको एक तोते में बदल दिया गया था क्योंकि मैं आपकी बेटी से बहुत प्यार करता था।

मुझे मालूम था कि मेरा एक दुश्मन राजा इनको भगा ले जाना चाह रहा था तो मैं एक तोते का रूप रख कर इनको एक इज़्ज़तदार ढंग से इनका मन बहलाने के लिये और इनको उस दुश्मन राजा के चंगुल से बचाने के लिये यहॉ आ गया।

मुझे पूरा भरोसा है कि मैंने अपने ये दोनों काम सफलता से निभा दिये हैं और अब मैं आपसे अपनी शादी के लिये आपकी बेटी का हाथ मॉगता हूॅ। अगर आप इजाज़त दें तो।"

यह सुन कर व्यापारी बहुत खुश हुआ। उसने शादी के लिये हॉ कर दी और अपनी बेटी की शादी उस राजा से कर दी।

यह सुन कर वह दुश्मन राजा तो बहुत गुस्से से भर गया पर वह कुछ कर नहीं सका। दूसरा तोता राजा और व्यापारी की बेटी दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज करते रहे।

2 सात पोशाकों वाली सुन्दरी[4]

बुढ़ियों के कारनामे वाली लोक कथाओं की एक और लोक कथा। यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी था जिसके दो बेटे थे। जब उसको लगा कि वह मरने वाला है तो उसने अपने बड़े बेटे को बुलाया और कहा — "बेटा, मैं तो अब मरने वाला हूँ मेरे और जीने की अब कोई उम्मीद भी नहीं है। तुम मुझे बताओ कि तुमको क्या चाहिये मेरा आशीर्वाद या मेरे पैसे?"

इधर उधर की बातें किये बिना ही वह लड़का बोला — "मुझे तो आप अपना पैसा दे दीजिये पिता जी, क्योंकि केवल आपके आशीर्वाद से तो मैं भूखा ही मर जाऊँगा।"

उसके बाद उसने अपने छोटे बेटे को बुलाया और उससे भी वही सवाल पूछा तो पहले तो उसका बेटा यह सुन कर रो पड़ा कि उसका पिता मरने वाला है क्योंकि वह अपने पिता को बहुत प्यार करता था।

[4] Beauty With the Seven Dresses (Story No 143) – a folktale from Italy from its Calabria area. Adaped from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

फिर सँभल कर बोला — "पिता जी, पैसे की मेरे लिये कोई कीमत नहीं है मुझे तो केवल आपका आशीर्वाद चाहिये।" और उसको आशीर्वाद दे कर उनका पिता मर गया।

उसके दोनों बेटे उसको दफ़नाने के लिये कब्रिस्तान ले गये। छोटा बेटा जिसके पास अपने पिता का केवल आशीर्वाद था बहुत रोया जबकि बड़ा बेटा जिसको उसकी सारी जायदाद और पैसा मिला था वह वहाँ खड़े खड़े भी यह सोच रहा था कि वह अपने पिता के उस पैसे और जायदाद को किस तरीके से इस्तेमाल करेगा।

आखीर में उसने निश्चय किया कि वह एक कैफ़े खोलेगा और उसने एक कैफ़े खोल लिया और उसके काउन्टर के पीछे खड़ा हो गया। उसका छोटा भाई जिसका नाम फ्रान्सैस्को[5] था अपनी किस्मत आजमाने के लिये घर छोड़ कर बाहर की दुनियाँ में चल दिया।

काफी चलने के बाद एक शाम को उसको एक छोटी सी रोशनी दिखायी दी। वह रोशनी उससे बहुत दूर थी। उसको देख कर उसने सोचा — "अगर भगवान ने चाहा तो मुझे वहाँ पहुँचना ही चाहिये।"

सो भगवान ने भी वैसा ही चाहा जैसा उसने चाहा और वह वहाँ पहुँच गया। वहाँ एक महल था। वहाँ पहुँच कर उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया तो सात पोशाकों वाली एक सुन्दरी अपनी सात नौजवान स्त्रियों के साथ दरवाजा खोल कर बाहर आयी और

[5] Francesco – the name of the younger son.

उसको अन्दर ले गयी। उसने उसको खाना खिलाया और सोने की जगह दी।

सुबह को उस सुन्दरी ने उस नौजवान से बातें की तो उसको लगा कि उसको उस नौजवान से शादी कर लेनी चाहिये क्योंकि वह उसके रूप रंग और उठने बैठने के ढंग से बहुत प्रभावित थी।

उसने उससे यह बात कह ही दी कि वह उससे शादी करना चाहती है। वह खुद भी बहुत सुन्दर थी और देखने में भी शानदार थी सो कुछ ही दिन में उनकी शादी हो गयी।

एक दिन जब वे खिड़की के बाहर बागीचे की तरफ देख रहे थे तो उस सुन्दरी ने अपने पति से कहा — "चिचिलो[6], क्या तुमको पेड़ पर टॅगी वह सात हिस्सों वाली पोशाक दिखायी दे रही है?"

उसने ऐसा इसलिये कहा कि उस एक पोशाक में ही एक के अन्दर एक सात पोशाकें शामिल थीं।

वह बोला — "हॉ हॉ दिखायी दे रही है। पर तुम यह मुझसे क्यों पूछ रही हो?"

सुन्दरी बोली — "मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूॅ कि अगर कोई चिड़िया उस पोशाक पर आ कर बैठ जाये और तुम उसको पकड़ लो तो तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे। और अगर तुमने कहीं उस चिड़िया को मार दिया तो फिर तो वह फ़ाक ही उड़ जायेगी और मैं बहुत मुश्किल में पड़ जाऊॅगी।

[6] Ciccillo – maybe the younger son's nickname

और अगर इससे कुछ और भी ज़्यादा हुआ तो इस कमरे में एक लाल पोशाक रखी है तुम उसको पहन लेना और मेरी खोज में यह घर छोड़ देना। फिर मैं देखूँगी कि तुम मुझको फिर से पा सकोगे।"

और फिर एक दिन ऐसा ही हुआ कि जब वह नौजवान शिकार पर गया हुआ था एक चिड़िया उस सात हिस्से वाली फ्राक पर आ कर बैठ गयी। चिचिलो अपने शिकार के मूड में था सो उसने ध्यान ही नहीं दिया कि वह किसको मार रहा है और उसने उस चिड़िया को मार दिया।

चिड़िया के मरते ही वह सात हिस्से वाली फ्राक तुरन्त ही हवा में उड़ने लगी और ऑखों से ओझल हो गयी। तब चिचिलो को अपनी पत्नी की बात याद आयी। पागल सा वह अपने घर की तरफ दौड़ा। उसको डर था कि घर में जरूर ही कुछ बहुत बुरा हो गया है।

उसको वहॉ देख कर सुन्दरी ने उससे पूछा कि क्या मामला है। वह इतना घबराया हुआ क्यों है पर उसको कुछ भी बताने की उसकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी।

सुन्दरी को कुछ शक सा हुआ तो उसने पेड़ के ऊपर की तरफ देखा तो पाया कि वह सात हिस्से वाली फ्राक तो वहॉ से जा चुकी थी।

इस पर तो वह बहुत परेशान हो गयी और बोली — "मुझे धोखा दिया गया है। मेरे साथ छल किया गया है। अब वे लोग आयेंगे और मुझे यहॉ से ले जायेंगे। याद रखना अगर ऐसा कुछ हुआ तो वह लाल पोशाक पहन लेना और मुझे छोड़ना नहीं।"

अब हम इन दोनों को तो यहीं छोड़ते हैं और सात हिस्से वाली फ्राक के पीछे पीछे चलते हैं। वह फ्राक उड़ती चली जा रही थी उड़ती चली जा रही थी। उड़ते उड़ते वह एक महल के पास जा पहुॅची।

वहॉ से वह खिड़की से हो कर महल के अन्दर घुस गयी और उस महल के राजा की मेज के पास आ कर रुक गयी। राजा वहॉ उस मेज पर बैठा बैठा कुछ लिख रहा था।

राजा ने उस सात हिस्से वाली पोशाक को इधर उधर से देखा तो उसको आश्चर्य हुआ कि वह पोशाक किसकी है। उसने वहॉ के लोगों से भी पूछा पर किसी को उस पोशाक के बारे में कुछ पता नहीं था।

तभी एक बुढ़िया को पता चला कि राजा एक सात हिस्सों वाली फ्राक के बारे में पता करने की कोशिश कर रहा है तो वह राजा के पास गयी और बोली — "मैं इस पोशाक की मालकिन को ढूॅढ कर ला सकती हूॅ।"

राजा ने पूछा — "तुम्हें उसको ढूॅढने के लिये क्या चाहिये?"

बुढ़िया बोली — "मुझे रोज़ोलियो[7] की दवा मिलायी हुई बोतल चाहिये। एक पौंड मिठाई चाहिये। वह भी दवा मिलायी हुई होनी चाहिये। फिर बाकी मुझ पर छोड़ दीजिये।

हॉ मुझे एक अच्छे गाड़ीवान के साथ साथ एक अच्छी गाड़ी की भी जरूरत है। मैं अपने कपड़ों में एक खंजर[8] छिपा कर उस गाड़ी में जाऊॅगी।"

राजा ने उसको वे सब चीज़ें दे दीं जो उसने मॉगी थीं और वह बुढ़िया उस गाड़ी में बैठ कर चल दी।

जब वे कुछ दूर चले गये तो उसने गाड़ीवान को एक महल के सामने रोक कर कहा — "तुम यहॉ मेरा इन्तजार करो और जब मैं तुमको पुकारूॅ तो तुम अन्दर चले आना।"

उस समय बारिश हो रही थी। वह सीधी महल में चली गयी। वहॉ जा कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया तो उस लड़की का पति सात नौजवान स्त्रियों के साथ उसको अन्दर ले जाने के लिये बाहर आया।

बुढ़िया ने उससे रात को ठहरने की जगह मॉगी तो पति ने उसका खुशी से स्वागत किया और उसको महल के अन्दर ले गया। अन्दर ले जा कर वह उसको खाना खाने के लिये मेज पर ले गया।

---

[7] Rosolio - Rosolio is a type of Italian liquor derived from rose petals, and which is often used as the basis for the preparation of other liquors of various flavors.

[8] Translated for the word "Dagger". A middle size knife – see its picture above

मेज पर बैठ कर उस बुढ़िया ने अपनी वह दवा मिली रोज़ोलियो और मिठाई निकाली और बोली — "यह आप जैसे बड़े लोगों के लिये ठीक तो नहीं है पर आप लोग इसको मेरी खुशी के लिये खा लें।

मेरी बेटी की अभी अभी शादी हुई है और मैं यह थोड़ी ही चीज़ अपने साथ ला सकी हूँ ताकि आप लोग भी इस मौके की खुशी मना सकें।"

जब सबने वह मिठाई खा ली तो वे पति पत्नी दोनों बेहोश हो कर गिर पड़े। उस बुढ़िया ने अपना खंजर निकाला और उसने उससे उस राजकुमारी के पति को मार डाला।

फिर उसने गाड़ीवान को आवाज लगायी जो बाहर उसके पुकारने का इन्तजार कर रहा था। बुढ़िया की पुकार सुन कर वह तुरन्त ही अन्दर आ गया।

दोनों ने सुन्दरी को उठाया – एक ने सिर की तरफ से दूसरे ने पैर की तरफ से और उसको गाड़ी में रख दिया जैसे कि वह सो रही हो। उसको गाड़ी में बिठाने के बाद वे राजा के पास दौड़ चले।

राजा उनका बड़ी बेचैनी से इन्तजार कर रहा था। जब वह बुढ़िया वहाँ पहुँची तो उसने सुन्दरी को एक कमरे में अकेले लिटा दिया जब तक वह होश में आती।

सुबह को राजा उसके कमरे में गया तो उसको जगा हुआ पाया पर वह अपनी बदकिस्मती पर रो रही थी। राजा ने उसको तसल्ली

देने की कोशिश की पर फिर अचानक पूछा — "हम शादी कब करेंगे?"

इस सवाल पर सुन्दरी ने उसके ऊपर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। अब क्योंकि उस लड़की को चुप करने का और कोई तरीका नहीं था इसलिये उस समय राजा वहॉ से उठ कर चला गया।

एक महीने बाद राजा वहॉ फिर वापस आया और अपना वही सवाल उससे फिर से पूछा तो सुन्दरी ने जवाब दिया — "जब तुमको कोई आदमी पूरा का पूरा लाल पोशाक पहने मिल जायेगा तब मैं तुमसे शादी करूँगी।"

राजा ने आराम की सॉस ली और सारी दुनियॉ में टैलीग्राफ के जरिये खबर भेज दी कि जैसे ही उनको कोई आदमी पूरा का पूरा लाल पोशाक पहने मिल जाये तो वह उसको राजा के पास ले आयें।

पर चिचिलो तो मर चुका था। उस बुढ़िया ने उसको खंजर मार मार कर मार दिया था सो पूरी की पूरी लाल पोशाक वाला आदमी अब किसी को कहॉ से मिलता।

एक दिन चिचिलो का बड़ा भाई जिसने कैफ़े खोला था बहुत गरीब हो गया तो उसने सोचा कि वह किसी और देश में जाये और वहॉ जा कर अपनी किस्मत आजमाये।

सो इत्तफाक से वह भी उसी सड़क पर चल दिया जिस पर उसका छोटा भाई गया था और उसी महल में आ गया जहाँ वह सुन्दरी रहती थी। उसने भी आ कर उस महल का दरवाजा खटखटाया तो सात नौजवान स्त्रियों ने दरवाजा खोला।

उस भाई को देख कर उनको लगा कि वह तो मरा हुआ चिचिलो था क्योंकि दोनों भाइयों की सूरत बहुत मिलती थी। उसको देख कर उन्होंने पूछा — "अरे तुम ज़िन्दा हो गये?"

यह सुन कर बड़ा भाई आश्चर्य से बोला — "क्या मतलब?"

स्त्रियों ने पूछा — "तुम्हारा कोई भाई था क्या जो तुम जैसा दिखायी देता था?"

बड़ा भाई बोला — "हाँ मेरा एक छोटा भाई है पर तुम यह सब क्यों पूछ रही हो?"

तब वे बोलीं — "आओ हमारे साथ आओ तब तुमको पता चलेगा।" कह कर वे उसको एक कमरे में ले गयीं जहाँ एक आदमी मरा पड़ा था। वह मरा हुआ आदमी उसका भाई था।

जैसे ही बड़े भाई ने उस आदमी को देखा तो वह रोने लगा — "ओह मेरे भाई, ओह मेरे भाई।"

उन सातों स्त्रियों ने उसको तसल्ली दी और बताया कि किस तरह चिचिलो को किस बेरहमी से मारा गया था। उन्होंने उस आये हुए आदमी को वहीं अपने पास ही ठहरा लिया।

एक दिन यह बड़ा भाई सुबह को दरवाजे पर खड़ा हुआ था कि उसने दो गिरगिट देखे – एक बड़ा और एक छोटा। देखते देखते बड़े वाले गिरगिट ने छोटे वाले गिरगिट को मार दिया और वहॉ से चला गया।

कुछ देर बाद वह एक तरह का पत्ता लिये लौटा और उस पत्ते को उस मरे हुए गिरगिट के शरीर पर मल दिया। वह उस पत्ते को उसके शरीर पर तब तक मलता रहा जब तक कि वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

बड़े भाई को यह देख कर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी। उसने सोचा कि इस पत्ते से तो वह अपने भाई को भी ज़िन्दा कर सकता था और फिर वैसे भी कोशिश करने में क्या हर्ज था।

सो उसने भी वह पत्ता तोड़ा और अपने मरे हुए भाई के सारे शरीर पर मल दिया। कुछ ही देर में वह भी ज़िन्दा हो गया। ज़िन्दा होते ही उसने अपनी पत्नी के बारे में पूछा तो उसको अपनी पत्नी की दी गयी चेतावनी याद आ गयी।

उसने तुरन्त ही उस कमरे में रखी लाल पोशाक पहनी और उसको दुनियॉ भर में ढूँढने चल दिया।

उसी दिन उस सुन्दरी की शादी राजा से होने वाली थी। राजा के आदमी लाल पोशाक वाले आदमी को ढूँढने में नाकामयाब रहे थे सो सुन्दरी ने उसके मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी और सोच लिया

था कि शायद वह मर गया होगा इसलिये वह राजा से शादी करने पर तैयार हो गयी थी।

चिचिलो घूमता घूमता उसी शहर में आ गया था जिसमें सुन्दरी की शादी होने वाली थी। इतने दिनों की बेकार की खोज के बाद जब लोगों ने एक पूरे के पूरे लाल पोशाक वाले आदमी देखा तो उन्होंने उसको रोक लिया और उसको राजा के पास ले गये।

राजा उसको देख कर जल्दी से यह बात सुन्दरी को बताने गया कि उसको लाल पोशाक वाला आदमी मिल गया है और इस तरह अब उसकी शर्त पूरी हो गयी है और अब उनकी शादी में कोई अड़चन नहीं है।

यह सुन कर सुन्दरी बोली कि पहले वह उस लाल पोशाक वाले आदमी से खुद बात करेगी। उस लाल पोशाक वाले आदमी को एक बन्द कमरे में अकेला लाया गया। वहॉ उन दोनों ने अपनी अपनी बदकिस्मती की कहानी कहते हुए और आगे का प्लान बनाते हुए सारी रात गुजार दी।

सुन्दरी के पास महल की सारी चाभियॉ थीं। रात को जब राजा गहरी नींद सो गया तो वे दोनों उठे, दो गधों पर पैसों के थैले लादे और महल से भाग लिये।

सारा दिन चलते चलते जब अँधेरा हो आया तो उनको एक घुड़साल मिली। उन्होंने वहीं भूसे का एक जितना मुलायम और आरामदेह बिस्तर बन सकता था बनाया और लेट गये।

उस घुड़साल की छत पर एक शराबी खर्राटे मार कर सो रहा था और बार बार करवटें बदल रहा था। करवटें बदलते समय एक दफा वह ऊपर से नीचे गिर पड़ा और उन दोनों पति पत्नी के बीच में आ गिरा। गिर कर वह उस भूसे में नीचे को धॅस गया। पर फिर भी वह न तो जागा और ना ही उसने खर्राटे मारना छोड़ा।

सुबह को सुन्दरी सबसे पहले जागी। फिर उसने अपने पति को जगाया — "चिचिलो जागो, हमको देर हो रही है। हमको अपने पैसों वाले गधे पर चढ़ कर यहॉ से जल्दी ही निकल जाना चाहिये।

पर उसका पति अभी भी बहुत गहरी नींद सो रहा था सो उसने तो सुना ही नहीं। पर उस शराबी के कानों में पैसों का नाम पड़ा तो उसने तुरन्त ही जवाब दिया — "हॉ हॉ चलो चलो, हमको चल देना चाहिये।"

सुन्दरी ने उसकी आवाज नहीं पहचानी। अभी दिन नहीं निकला था और अॅधेरा ही था इसलिये वह उस आदमी को भी नहीं पहचान सकी और दोनों गधों की तरफ चल दिये और फिर गधों पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिये।

जब दिन निकल आया तब सुन्दरी ने देखा कि उसके साथ जाने वाला आदमी तो उसका पति नहीं था वह तो कोई और था। उसने उससे लड़ना शुरू कर दिया।

अब उस शराबी के पास एक ही रास्ता था। वह बढ़ा और उसने सुन्दरी को धक्का दे कर गधे से नीचे गिरा दिया। उसने

सुन्दरी को तो वहीं रोते धोते छोड़ा और पैसे और दोनों गधों को ले कर वहॉ से चलता बना।

अब सुन्दरी को फिर पता नहीं था कि वह अपने पति को कैसे ढूँढे क्योंकि वह तो उस शराबी के साथ बहुत दूर तक निकल आयी थी और वह शराबी उनके दोनों गधे ले कर चला गया था।

सो उसको पैदल ही वापस जाना पड़ा। चलते चलते वह एक भूसे के ढेर के पास आयी जहॉ उसको खेत में काम करने वाला एक लड़का मिल गया। उसने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह उसको अपने कपड़े दे दे।

उस लड़के ने उसको अपने कपड़े दे दिये। सुन्दरी उन कपड़ों को पहन कर आदमी के वेश में अब आगे चलने लगी। इस तरह वेश बदलने से उसको अब खतरा कम था।

उसके पति का अभी तक कोई पता नहीं था। अपने खाने पीने के लिये उसने एक आटा पीसने वाले की दूकान पर नौकरी कर ली थी। यह आटा पीसने वाला राजा के नोटरी[9] का आटा पीसता था।

सुन्दरी का काम इस आटा पीसने वाले का हिसाब किताब रखना था। उसकी लिखाई इतनी सुन्दर और साफ थी कि उस आटा

[9] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business. A notary's main functions are to administer oaths and affirmations, take affidavits and statutory declarations, witness and authenticate the execution of certain classes of documents, take acknowledgments of deeds and other conveyances, protest notes and bills of exchange, provide notice of foreign drafts, prepare marine or ship's protests in cases of damage, provide exemplifications and notarial copies, and perform certain other official acts depending on the jurisdiction.

पीसने वाले ने इतनी सुन्दर और साफ लिखाई इससे पहले कभी किसी की नहीं देखी थी।

नोटरी को जब इस बात का पता चला कि उसके आटा पीसने वाले के यहॉ एक लड़का काम करता है जिसकी लिखाई बहुत सुन्दर और साफ है तो उसने उसको अपने यहॉ नौकर रख लिया सो अब वह नोटरी का हिसाब किताब रखने लगी।

जब नोटरी ने अपने हिसाब की किताब राजा को दिखायी तो राजा भी उसकी लिखाई से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उस लड़के को अपनी सेवा में रख लिया।

इस बीच वह राजा जो सुन्दरी से शादी करना चाहता था मर गया। क्योंकि अगली सुबह जब उसने देखा कि उसकी होने वाली दुलहिन उस लाल पोशाक वाले के साथ भाग गयी है तो उसने दीवार से अपना सिर मार मार कर आत्महत्या कर ली।

अब उसके राज्य का वारिस कौन बने? वह राजा जिसने उस खेत वाले लड़के को अपने पास रखा था उसके राज्य का राजा बन गया।

सो उसने उस लड़के को उस मरे हुए राजा के राज्य में गवर्नर बना कर भेजा और उससे कहा कि वह वहॉ जा कर घोषणा करवा दे कि वह नये राजा की जगह उस राज्य के राजा का काम करेगा।

खेत वाले लड़के ने कहा कि अगर उसको वहॉ राज्य करना है तो उसको वहॉ के राज्य के हर आदमी पर राज करने के पूरे अधिकार दिये जायें।

वह राजा उसकी बात मान गया और उसने उसको वहॉ के राज्य के हर आदमी पर राज करने के उसको पूरे अधिकार दे दिये।

मरे हुए राजा के राज्य में आने पर सबसे पहला काम तो उसने यह किया कि उसने यह खबर सारे राज्य में फैला दी कि वहॉ का हर आदमी जिसके साथ कोई भी असाधारण घटना हुई हो वह उसके सामने आये, अपनी वह असाधारण घटना सुनाये और इसके बदले में वह उसको पैसों का एक थैला देगा।

यह खबर फैली तो पहला आदमी जो उसके सामने अपनी असाधारण कहानी सुनाने आया वह थी वह बुढ़िया जिसने उसके पति को मारा था और उसकी पत्नी, यानी उसको खुद को बेहोश करके उठा कर ले गयी थी।

गवर्नर बोला — "ओ नीच, तूने यहॉ आ कर यह सब कहने की मुझसे हिम्मत कैसे की?" और उसने उसको उबलते पानी के कड़ाह में डाल देने का हुक्म सुना दिया।

उसके बाद आया वह शराबी जो उसको और उसके गधों को पैसों के साथ चुरा कर भाग गया था। उसको भी वह बोला — "ओ चोर, तूने एक औरत को लूटा और फिर यह बात बताने के लिये

यहॉ भी चला आया?" सो उसने उसको एक खतरनाक चोर कहते हुए फॉसी की सजा सुना दी।

इन दोनों से निपटने के बाद आया उसका अपना पति अपनी कहानी सुनाने। उन दोनों ने एक दूसरे को आपस में देखते ही पहचान लिया और एक दूसरे के गले लग गये।

वह गवर्नर अन्दर गया और अपने कपड़े बदल कर आया। अब वह अपनी सात हिस्सों वाली फ्राक पहने थी और उसका पूरा शरीर गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था। उन लोगों ने फिर बहुत बढ़िया खाना खाया।

चिचिलो ने अपने बड़े भाई को भी वहीं रहने के लिये बुला लिया और उन सातों स्त्रियों को भी। चिचिलो वहॉ का राजा बन गया।

यह सब उसके पिता के आशीर्वाद का नतीजा था कि वह आज राजा बन गया था।

3 वर्मवुड[10]

बुढ़ियों के कारनामों की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह कहानी बहुत बार कही गयी है पर आज हम इसे एक बार फिर लिख रहे हैं। यह कहानी कुछ ऐसे है कि एक बार एक राजा और रानी थे। पर इस राजा और रानी के महल में जब भी रानी किसी बच्चे को जन्म देती तो वह एक लड़की को ही जन्म देती।

राजा को एक बेटे की जरूरत थी जो उसके बाद उसका राज्य सँभाल सकता। जब राजा का धीरज छूट गया तो उसने रानी से कहा — "रानी जी बस अब बहुत हो गया। अगर तुमने अब एक और लड़की को जन्म दिया तो मैं उसको मार दूँगा।"

और जैसा कि रानी को डर था इस बार उसने फिर से एक लड़की को जन्म दिया पर उसकी यह लड़की बहुत सुन्दर थी। कहीं राजा उसको मार न दे इसलिये उसने उसकी गौडमदर[11] से कहा — "इस बच्ची को तुम ले लो और जैसे तुम चाहो इसको वैसे रखो नहीं तो राजा इसको मार देंगे।"

---

[10] Wormwood (Story No 157) – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.
Wormwood is a kind of bitter bush plant.

[11] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

गौडमदर ने उस बच्ची को ले तो लिया पर वह यही सोचती रही कि वह उसका क्या करे। फिर वह उसको खेतों में ले गयी और उसको एक वर्मवुड[12] की झाड़ी के नीचे रख दिया।

उन्हीं खेतों के पास एक साधु रहता था। उसकी गुफा में एक हिरनी रहती थी जिसके कुछ छोटे छोटे छौने[13] थे जिनको वह दूध पिलाती थी।

वह हिरनी खाना खाने के लिये रोज बाहर जाती थी। एक दिन जब वह बाहर से खाना खा कर लौटी तो उसके बच्चों ने उसका दूध पीने की कोशिश की पर उसके थन खाली थे। उनमें दूध नहीं था सो उसके बच्चे भूखे रह गये।

उसके अगले दिन भी यही हुआ और उसके अगले दिन भी और उसके अगले दिन भी। इस तरह से उसके अपने बच्चे भूख से कमजोर होने लगे।

साधु ने जब यह देखा तो उसको उस हिरनी के बच्चों पर बहुत दया आयी सो वह उस हिरनी के साथ यह देखने के लिये बाहर गया कि हिरनी के दूध का क्या होता है। जब वह गया तो उसको पता

[12] Wormwood is a kind of woody plant, grown as bush, bitter in taste, native to Eurasia. It is used in medicine but at some places it is used as tea also – see its picture above.

[13] Translated for the word “Fawns” – means the children of a deer.

चला कि वह एक वर्मवुड की झाड़ी की तरफ जाती है और एक बच्ची को अपना दूध पिलाती है।

साधु ने उस बच्ची को उठा लिया और उसे अपनी गुफा में ले आया। उसने हिरनी से कहा — "लो अब तुम इस बच्ची को अपना दूध यहॉ पिलाओ और अपने दूध को अपने बच्चों और इस बच्ची दोनों में बॉटो।"

बच्ची धीरे धीरे बड़ी होती गयी। जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर और प्यारी होती गयी। वह उस साधु के घर का काम करती और साधु भी उसको इतना प्यार करता जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो। उसने उस बच्ची का नाम भी वर्मवुड की झाड़ी के नाम पर वर्मवुड ही रख दिया।

एक दिन एक और राजा शिकार खेलते खेलते उधर आ निकला। बीच में ही बहुत ज़ोर का तूफान आ गया। बहुत तेज़ हवा चलने लगी, बिजली चमकने लगी और गरज के साथ बहुत तेज़ बारिश होने लगी।

उस तूफान से बचने के लिये उस समय उसको केवल साधु की गुफा ही दिखायी दी सो वह उस साधु की गुफा में चला गया। एक राजा को भीगे हुए अपनी गुफा में आते देख कर साधु ने आवाज लगायी — "वर्मवुड, वर्मवुड। राजा के बैठने के लिये एक कुरसी ले कर आ।"

"वर्मवुड? अरे साधु, यह किस तरह का नाम है?"

तब साधु ने उसको उस बच्ची के वर्मवुड की झाड़ी में पाने और उस झाड़ी के नाम पर उसका नाम रखने के बारे में बता दिया।

जैसे ही राजा ने उस लड़की को देखा तो राजा बोला — "ओ साधु, क्या तुम मुझे इस लड़की को मेरे महल ले जाने की इजाज़त दोगे? तुम तो अब बूढ़े हो रहे हो। तुम्हारे बाद यह लड़की अकेली रह जायेगी तब यह कैसे करेगी? मैं उसको पढ़ाने के लिये टीचर रखूँगा उसको पढ़ना लिखना सिखाऊँगा।"

साधु बोला — "मैजेस्टी। मैं इस बच्ची को बहुत प्यार करता हूँ सो उसकी खुशी के लिये मैं इसको आपको महल में ले जाने की इजाज़त देता हूँ। जो शिक्षा आप इसको देंगे वह मेरे जैसे साधु के लिये तो इसको देना बिल्कुल ही नामुमकिन है।"

राजा ने उस लड़की को अपने साथ अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल चल दिया। महल पहुँच कर उसने उसको दो स्त्रियों के हवाले कर दिया।

जब राजा को उस लड़की के गुणों का पता चला तो उसने सोचा कि वह खुद ही उससे शादी करके उसको अपनी रानी बना लेगा। सो उसने वर्मवुड से शादी कर ली और इस तरह से वर्मवुड उस राज्य की रानी बन गयी। राजा उससे पागलपन की हद तक प्यार करता था।

एक दिन राजा को कहीं बाहर जाना था सो उसने रानी से कहा — "वर्मवुड, मुझे कहीं जाना है। पर मुझे चाहे कितनी भी कम देर

के लिये जाना पड़े फिर भी मुझे तुमको यहाँ अकेले छोड़ने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता पर क्या करूँ।"

कह कर राजा वहाँ से चला गया।

एक शाम राजा को अपने राज्य के बाहर कुछ राजकुमार और नाइट्स[14] मिल गये। वहाँ सबने संग साथ में अपनी अपनी पत्नियों की तारीफ करनी शुरू की।

राजा बोला — "करते रहो, तुम लोग जितनी चाहो अपनी अपनी पत्नियों की तारीफ करते रहो पर तुममें से किसी की भी पत्नी मेरी पत्नी जैसी नहीं हो सकती।"

यह सुन कर एक नाइट बोला — "मैजेस्टी, मैं शर्त लगाता हूँ कि मैं अगर आपकी गैरहाजिरी में पलेरमो[15] गया तो मैं आपकी पत्नी साथ कुछ समय गुजार कर जरूर आऊँगा।"

राजा बोला — "नामुमकिन, यह नामुमकिन है।"

नाइट बोला — "क्या हम इस बात पर शर्त लगा लें?"

राजा बोला — "हाँ हाँ, लगा लेते हैं।"

उन्होंने जायदाद पर शर्त लगायी। उन्होंने एक समय भी निश्चित किया – एक महीना। और वह नाइट पलेरमो चला गया।

---

[14] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

[15] Palermo is a place in Italy on its Sicily island.

पलेरमो पहुँच कर वह सुबह शाम राजा के महल की खिड़की के नीचे चक्कर काटने लगा। दिन निकलते चले गये पर उसको रानी की एक झलक भी देखने को नहीं मिली। महल की खिड़की हमेशा बन्द ही रहती थी।

एक दिन जब वह वहाँ बहुत ही नाउम्मीदी से घूम रहा था तो वहाँ एक बुढ़िया आयी और उससे भीख माँगने लगी। गुस्से में उसने कहा — "चली जा यहाँ से। मुझे तंग न कर।"

बुढ़िया बोली — "सरकार, आप इतना क्यों परेशान है? क्या चीज़ आपको इतना उदास कर रही है?"

इस पर नाइट ने उसको अपनी शर्त के बारे में बता दिया और कहा कि वह महल में अन्दर जाना चाहता था ताकि वह यह देख सके कि रानी कैसी दिखायी देती थी।

बुढ़िया बोली — "आप शान्त हो जायें सरकार, मैं देखती हूँ कि क्या करना है।"

कह कर उस बुढ़िया ने एक टोकरी में अंडे और फल भरे और उनको ले कर महल की तरफ चली। महल के दरवाजे पर जा कर उसने रानी से मुलाकात की इच्छा जाहिर की। उसको इजाज़त मिल गयी।

जब वह रानी के साथ अकेली थी तो उसने रानी को गले लगाया और उसके कान में फुसफुसायी — "मेरी बेटी, तुम मुझे नहीं

जानती पर मैं तुम्हारी एक रिश्तेदार हूँ। और मुझे बहुत खुशी है कि मैं तुम्हारे लिये ये कुछ चीज़ें ला सकी।"

रानी को अपने किसी रिश्तेदार के बारे में बिल्कुल पता नहीं था। उसने सोचा शायद यह बुढ़िया उसकी कोई रिश्तेदार रही होगी।

उसने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको महल में रहने के लिये बुला लिया। उसने सबको उसकी इज़्ज़त करने के लिये भी कह दिया।

अब रानी के कमरे में वह कभी भी आ जा सकती थी और महल में कहीं भी कुछ भी कर सकती थी।

एक दिन जब रानी सो रही थी तो वह बुढ़िया रानी के कमरे में घुसी। उसके बिस्तर के पास पहुँची और उसकी चादर के नीचे झाँका तो उसने देखा कि उसकी नंगी कमर पर एक मस्सा[16] था। उसने बड़ी सावधानी से कैंची से उसके मस्से के कुछ बाल काट लिये और वहाँ से चल दी। वह अपने काम से बहुत खुश और सन्तुष्ट थी।

वे बाल ला कर उसने नाइट को दे दिये। जब नाइट के हाथ में रानी के मस्से के बाल आ गये और उसने उस बुढ़िया के मुँह से रानी का वर्णन सुन लिया तो उसने उस बुढ़िया को इनाम में बहुत सारे पैसे दिये और वहाँ से तुरन्त ही चल दिया।

[16] Translated for the word "Mole"

निश्चित दिन पर वह राजा और दूसरे नाइट्स के पास पहुँचा। वे सब लोग यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थे कि शर्त कौन जीतेगा।

वहाँ पहुँच कर वह नाइट बोला — "योर मैजेस्टी, जो मैं अब आपसे कहने जा रहा हूँ मुझे उसके लिये बहुत अफसोस है। पर अब आप यह बताऐं कि यह सच है या नहीं – आपकी पत्नी ऐसी है कि नहीं...।" और उसने उसके चेहरे का बहुत ही थोड़ा सा वर्णन दे दिया।

राजा बोला — "यह बिल्कुल ठीक है। पर इससे तो कुछ साबित नहीं होता क्योंकि यह सब तो तुम बिना उसको देखे किसी से सुन कर भी बता सकते हो।"

"तो मैजेस्टी फिर आप ध्यान से सुनें। यह सच है या नहीं कि आपकी पत्नी बाँये कन्धे पर एक मस्सा है?"

यह सुन कर राजा तो पीला पड़ गया। वह बोला — "हाँ है तो।"

तब उस नाइट ने एक लाकेट निकाला और कहा — "मैजेस्टी, मुझे यह कहते में अच्छा तो नहीं लग रहा पर यह लाकेट यह साबित करता है कि मैं यह शर्त जीत गया।" काँपते हाथों से उसने वह लाकेट खोला और उसमें से रानी के मस्से के बाल निकाले और राजा को दिखाये। उन बालों को देख कर तो राजा का सिर लटक गया।

तुरन्त ही राजा अपने महल लौटा। काफी दिनों की गैरहाजिरी के बाद में जब राजा घर आया तो वर्मवुड हॅसती हुई उससे मिलने आयी पर राजा ने न तो उसे गले लगाया और न ही उससे बात की।

उसने अपने नौकरों से अपनी घोड़ा गाड़ी तैयार करने के लिये कहा और फिर अपनी पत्नी से कहा "चलो बैठो इसमें।" रानी उसमें बैठ गयी उसके बाद राजा भी उसके बराबर में बैठ गया और गाड़ी की रास[17] अपने हाथ में ले ली।

रानी ने आश्चर्य से राजा की तरफ देखा भी कि आज राजा उसके साथ इस तरह से क्यों बरताव कर रहा था पर राजा तो बिल्कुल चुपचाप बैठा था।

जब वे लोग पैलैग्रिनो पहाड़[18] की तलहटी में पहुॅचे तो राजा ने घोड़ों की रास खींची, गाड़ी रोकी और रानी से कहा "उतरो।" रानी बेचारी उतर गयी।

राजा ने गाड़ी से बिना उतरे उसको एक कोड़ा मारा जिससे वह गिर पड़ी। उसको वहीं उसी हालत में छोड़ कर वह वहॉ से चला गया।

इत्तफाक से उस दिन एक डाक्टर और उसकी पत्नी उधर से सेन्ट रोज़ैली के मन्दिर[19] जा रहे थे। उन्होंने अपने बेटे के जन्म से

[17] Translated from the word "Reins"
[18] Pellegrino Mountain
[19] The Sanctuary of St Rosali

पहले एक मन्नत मानी थी वे उसी को पूरा करने के लिये वहॉ जा रहे थे। उनके पीछे उनका एक नौकर अली उनके उस बेटे को ले कर आ रहा था।

जब वे पैलैग्रिनो पहाड़ की तलहटी के पास पहुँचे तो उन्होंने किसी के कराहने की आवाज सुनी। डाक्टर ने सोचा "यहॉ इस सूनी जगह में यह कौन हो सकता है।" सो वह उसी तरफ चल दिया जिधर से वह कराहने की आवाज आ रही थी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो एक घायल और अधमरी स्त्री पड़ी हुई है। डाक्टर ने तुरन्त ही उसकी जितनी अच्छे तरीके से मरहम पट्टी कर सकता था उसकी मरहम पट्टी की और फिर अपनी पत्नी से कहा — "अब हम रोज़ैली के मन्दिर फिर कभी चलेंगे पहले हम इस स्त्री की सहायता कर लें। हम इसको घर ले चलते हैं और वहॉ इसको ठीक करने की कोशिश करेंगे।"

सो वे उसको अपने घर ले गये और वहॉ उसकी देखभाल की। डाक्टर की देखभाल में वर्मवुड जल्दी ही ठीक हो गयी।

डाक्टर ने उससे कितने ही सवाल पूछे पर रानी ने अपने बीते हुए दिनों के बारे में उनको कोई भी बात नहीं बतायी। न ही उनको यह बताया कि यह घटना उसके साथ कैसे हुई।

इस सबके बाद भी डाक्टर की पत्नी ने जब देखा कि वह स्त्री तो बहुत गुणों वाली है तो वह उसको पसन्द करने लगी और उसने

उसको अपने घर में नौकरानी रख लिया। अब वह उनकी छोटी बच्ची को सँभालती थी।

एक दिन डाक्टर बोला — "प्रिये उस दिन तो हम इस स्त्री की वजह से अपनी मन्नत पूरी नहीं कर पाये थे तो अब हम अपनी छोटी बेटी को इस स्त्री के पास छोड़ते हैं और अली के साथ अपनी उस मन्नत को पूरी करने के लिये सेन्ट रोज़ैली के मन्दिर चलते हैं।

सो अगले दिन वे अपनी बच्ची और उस स्त्री को सोता छोड़ कर घर से जल्दी ही निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने के बाद ही अली ने अपने माथे पर हाथ मारा और बोला — "मालिक, मैं खाने की टोकरी तो घर ही भूल आया।"

डाक्टर बोला — "अरे, तो जाओ और उसे जल्दी से ले कर आओ।"

खाने की टोकरी भूलने का तो उसका एक बहाना था। असल में तो इस नौकर को लग रहा था कि उसके मालिकों को यह नौकरानी बहुत पसन्द आ गयी थी सो उसको उस बेचारी के प्रति बहुत ही नफरत पैदा हो गयी थी।

वह तुरन्त घर की तरफ दौड़ा। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वह स्त्री और बच्ची तो अभी भी सो ही रहे थे।

उसने कसाई वाला एक बड़ा सा चाकू लिया और उससे उस छोटी बच्ची का गला काट दिया। गला काट कर वह वापस डाक्टर के पास चला गया।

जब वह स्त्री जागी तो वह खून में भीगी हुई थी। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि बच्ची का तो गला ही कटा हुआ है। देखते ही वह चिल्लायी — "ओ मेरे भगवान। बेचारे इसके माता पिता। मैं क्या करूँ। मैं उनको क्या जवाब दूँगी।"

परेशान हो कर उसने एक खिड़की खोली और वहाँ से कूद कर जितनी तेज़ भाग सकती थी बाहर भाग गयी।

भागती भागती वह एक खुले मैदान में आयी जहाँ टूटा फूटा एक महल खड़ा हुआ था। वह उस महल के अन्दर चली गयी। उस महल के अन्दर कोई नहीं था। वहाँ उसको एक सोफा दिखायी दे गया सो वह उस सोफे पर जा कर लेट गयी और डर और थकान की वजह से लेटते ही सो गयी।

X X X X X X X

अब हम रानी को यहीं सोता हुआ छोड़ते हैं और उस राजा के पास चलते हैं जो कोई लड़की नहीं चाहता था।

कुछ समय बाद उसकी रानी ने अपने पति को बताया कि उस समय उसने जिस लड़की को जन्म दिया था वह मरी नहीं थी बल्कि उसने उसको उसकी गौडमदर को दे दिया था। पर फिर उसने उसके बारे में कुछ नहीं सुना।

इसको सुन कर तो राजा बहुत बेचैन हो गया और एक दिन रानी से बोला — "प्रिये, मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने ऐसा फैसला किया और उस फैसले की वजह से तुमको ऐसा करना पड़ा।

मैं घर छोड़ कर जा रहा हूँ और अब मैं तभी लौटूँगा जब मुझे अपनी बेटी की कोई खबर मिल जायेगी।" और यह कह कर वह घर छोड़ कर चला गया।

वह चलता रहा चलता रहा। काफी दूर जाने के बाद जब रात हुई तो वह एक अकेली खुली जगह में खड़ा था। वहाँ एक टूटा फूटा महल खड़ा था। वह उस महल के अन्दर चला गया।

X X X X X X X

अब हम इस राजा को भी यहीं इस महल में छोड़ते हैं और उस राजा के पास चलते हैं जो अपनी रानी को पैलैग्रीनो पहाड़ की तलहटी में छोड़ कर चला गया था। वह राजा जितना अपनी पत्नी के बारे में सोचता था उसको उतना ही बुरा लगता था।

उसने उस नाइट से वह सब कुछ सुना तो था पर उसका मन नहीं मान रहा था कि वह सच था क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था।

वह सोचता रहा — "क्या हो अगर वह नाइट झूठ बोल रहा हो। क्या हो अगर मेरी पत्नी वाकई बेकुसूर हो। क्या वह अभी भी ज़िन्दा होगी या फिर वह मर गयी होगी? यहाँ इस महल में उसके

बिना मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। मैं उसको सारी दुनियॉ में ढूँढूँगा और अब मैं तभी वापस लौटूँगा जब मुझे उसकी कोई खबर मिल जायेगी।"

सो वह भी अपनी पत्नी को ढूँढने के लिये महल से निकल पड़ा और चलते चलते वह भी एक अकेली खुली जगह में आ गया जहॉ टूटा फूटा एक महल खड़ा था।

वह उस टूटे महल के अन्दर चला गया तो उसने देखा कि एक और राजा वहॉ एक आराम कुरसी पर बैठा आराम कर रहा था। वह भी वहीं पास ही एक दूसरी कुरसी पर जा कर बैठ गया।

X X X X X X X

अब हम इस राजा को भी यहीं इसी महल में छोड़ते हैं और उस डाक्टर के पास चलते हैं जिसने वर्मवुड को बचाया था। जब वह अपनी यात्रा से वापस आया तो घर में इस आशा से घुसा कि वह अपनी छोटी बेटी को देखेगा पर उसको तो वह मरी हुई दिखायी दी। उसका गला कटा हुआ था।

तो सबसे पहले उसके दिमाग में यही आया कि वह उस नौकरानी को ढूँढे क्योंकि वह उसको उसी के पास छोड़ कर गया था।

सो वह बोला — "अली, हमको उस नीच स्त्री को अगर जरूरत हो तो दुनियॉ भर में ढूँढना चाहिये और उसको उसी तरह से मारना चाहिये जैसे उसने हमारी बेटी को मारा है।"

सो वह भी अली को साथ ले कर उस स्त्री की खोज में निकल पड़ा। उसको ढूँढते ढूँढते वह भी एक अकेले खुले मैदान में आ पहुँचा जहॉ एक टूटा फूटा महल खड़ा था और वह भी उस महल में घुस गया।

अन्दर जा कर उसने इधर उधर देखा तो वहॉ दो राजाओं को बराबर बराबर दो आराम कुरसियों पर बैठे आराम करते पाया। वह डाक्टर और उसका नौकर अली दोनों ही उनके सामने वाली कुरसियों पर जा कर बैठ गये।

अब चारों वहॉ बैठे थे – चुपचाप। हर एक अपने अपने विचारों में खोया हुआ था। कमरे के बीच में एक लालटेन जल रही थी जिसको तेल की जरूरत थी।

तभी वहॉ एक तेल डालने वाली कुप्पी[20] आयी और उसने लालटेन से कहा — "ज़रा सा नीचे हो जाओ तो मैं तुम्हारे अन्दर तेल डाल दूँ।"

यह सुन कर लालटेन थोड़ा नीचे को हो गयी और तेल डालने वाली कुप्पी ने उसमें तेल डाल दिया।

[20] Translated for the "Oil Cruest:" – see its picture above.

तेल डालने के बाद कुप्पी ने लालटेन से पूछा — "क्या तुम्हारे पास मुझे बताने के लिये कोई मजेदार बात है?"

लालटेन बोली — "तुम मुझसे क्या सुनना चाहोगी? मेरे पास तुम्हें बताने के लिये कुछ मजेदार बात तो है।"

"तो बताओ न।"

लालटेन बोली — "तो सुनो। एक राजा था जो लड़की नहीं चाहता था। उसने अपनी पत्नी से कहा कि अगर उसने एक और लड़की को जन्म दिया तो वह उस लड़की को मार डालेगा।

इत्तफाक से रानी ने अगली बार भी एक लड़की को जन्म दिया। रानी अपनी बच्ची को मरने देना नहीं चाहती थी सो उसने उसको बचाने के लिये उसको तुरन्त ही वहॉ से कहीं और भेज दिया।

आगे सुनो। जब यह बच्ची बड़ी हुई तो एक राजा ने उससे शादी कर ली। कुछ नाइट्स ने इस राजा को धोखा दिया और यह राजा उसको पैलैग्रीनो पहाड़ की तलहटी में ले गया, उसको मारा और उसको वहीं जमीन पर बेहोश पड़ा छोड़ कर वहॉ से चला गया।

एक डाक्टर उधर से जा रहा था जिसने उसके कराहने की आवाज सुनी।"

जैसे जैसे लालटेन अपनी कहानी आगे बढ़ाती जा रही थी वहॉ बैठे अधसोये लोगों की ऑखें खुलती जा रही थीं। उन्होंने एक दूसरे

की तरफ देखा और अपनी अपनी कुरसियों से उछल पड़े। अली तो यह सब सुन कर पत्ते की तरह कॉपने लगा।

लालटेन ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "अब तुम ज़रा यह सुनो। उस डाक्टर ने क्या किया जब उसने वहॉ एक लड़की को घायल पड़े देखा तो वह उसको अपने घर ले गया और बाद में उसको अपनी बेटी की आया बना दिया।

उनके घर में उनका एक नौकर भी था जो उस आया से बहुत जलता था सो उसने उस छोटी बच्ची को मार दिया और सारा जुर्म उस बेचारी आया पर आ पड़ा।"

तेल डालने वाली कुप्पी एक लम्बी आह भर कर बोली — "वह बेचारी आया। पर वह आया अब है कहॉ? क्या वह ज़िन्दा है या मर गयी?"

लालटेन बोली — "श श श श। वह ऊपर वाले कमरे में सोफे पर सो रही है। यहॉ उसका राजा पिता और राजा पति बैठे हैं जो अपने किये पर पछता रहे हैं और उसको ढूँढ रहे हैं।

और वह डाक्टर भी यहीं बैठा है जो उससे बदला लेने की इच्छा से उसको ढूँढ रहा है। वह समझता है कि उसकी बच्ची का खून उसी ने किया है।"

तभी राजा पिता, राजा पति और डाक्टर अपनी अपनी कुरसियों से उठे। इससे पहले कि अली वहॉ से बच कर भागता

डाक्टर ने तुरन्त ही अली को पकड़ लिया। तीनों ने मिल कर उसको मार दिया।

फिर वे सब ऊपर दौड़े और उस काउच के पास घुटनों पर बैठ गये जिस पर वौर्मवुड सो रही थी।

राजा पिता बोला — "यह मेरी है। यह मेरी बेटी है।"

राजा पति बोला — "यह मेरी है। यह मेरी पत्नी है।"

डाक्टर बोला — "यह मेरी है। मैंने इसकी जान बचायी है।"

आखीर में वह उस राजा के पास चली गयी जो उसका पति था। फिर उसने वर्मवुड के पिता राजा और डाक्टर को अपनी पत्नी के लौट आने की खुशी मनाने के लिये बुलाया। उसके बाद वे सब एक खुश परिवार की तरह से रहे।

4 स्पेन का राजा और अंग्रेज मीलौर्ड[21]

बुढ़ियों के कारनामों की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक राजा ने अपने बेटे को उसकी **18**वीं सालगिरह पर अपने पास बुलाया और कहा — "बेटा समय निकलता जा रहा है। मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। अगर हम मर गये तो हमारा राज्य कौन सँभालेगा इसलिये तुम अब शादी कर लो।"

बेटे को पिता के ये शब्द कुछ बहुत ज़्यादा अच्छे नहीं लगे सो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, इस बात को सोचने के लिये अभी हमारे पास बहुत समय है।"

पर राजा उसको इस बात का इशारा करता ही रहा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये जब तक कि उसके बेटे ने ही उसको यह कहते हुए चुप नहीं कर दिया — "पिता जी, समझने की कोशिश करिये। मैं तभी शादी करूँगा जब मुझे कोई ऐसी लड़की मिलेगी जो रिकोटा चीज़[22] की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।"

---

[21] The King of Spain and the English Milord (Story No 158) – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

[22] Ricotta cheese is kind of processed Paneer of India. It is used in western countries in various ways.

यह सुन कर राजा ने अपने सलाहकारों को बुलाया और कहा — "मुझे तुम लोगों को यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि राजकुमार शादी के लिये राजी हो गया है।

वह उस लड़की से शादी करेगा जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो। आप लोगों की क्या राय है?"

अक्लमन्द सलाहकार बोले — "मैजेस्टी, आप अपने कुछ दरबारियों को चुनिये और उनको एक चित्रकार, कुछ घोड़ा गाड़ी हॉकने वाले, नौकर और और भी जो कुछ उन्हें चाहिये दे दीजिये और उनको दुनियॉ भर में ऐसी लड़की ढूँढने के लिये भेज दीजिये जो रिकोटा चीज़ की तरह से सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।

एक साल बाद राजकुमार से कहिये कि वह उनमें से जो भी उसको सबसे अच्छी लड़की लगे वह उससे शादी कर ले।"

सो राजा ने अपने दरबार से कुछ अच्छे दरबारी चुने और उनको एक चित्रकार, कुछ घोड़ा गाड़ी हॉकने वाले और कई नौकर दे कर ऐसी लड़की ढूँढने के लिये बाहर भेज दिया जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।

एक आदमी एक राज्य गया दूसरा दूसरे राज्य गया। इस तरह वे सब पूरी दुनियॉ के कई राज्यों में गये।

उनमें से एक आदमी स्पेन गया जहॉ जा कर उसने सबसे पहला काम यह किया कि वह एक कैमिस्ट के पास रुका और उससे बात करने लगा। बातों बातों में वे दोनों दोस्त बन गये। कैमिस्ट ने पूछा — "जनाब आप कहॉ से आते हैं?"

उस आदमी ने कहा — "हम एक ऐसी लड़की की तलाश में हैं जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो। क्या इधर ऐसी कोई लड़की है?"

कैमिस्ट बोला —"ओह अगर तुम ऐसी ही किसी लड़की की तलाश में हो तो यहॉ एक बहुत ही सुन्दर लड़की है। वह बिल्कुल रिकोटा चीज़ की तरह सफेद है और गुलाब की तरह से गुलाबी है। पर उसको देखना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि वह कभी बाहर नहीं निकलती।

मैंने उसको खुद ही कभी नहीं देखा और जो भी मैं कुछ तुम्हें बता रहा हूॅ वह भी बस सुनी सुनायी ही बता रहा हूॅ। वह ऐसे लोगों की बेटी है जो केवल अन्दर ही अन्दर रहते हैं इसलिये तुम उसको कभी बाहर नहीं देखोगे।"

"तो फिर हम उसे देखें कैसे?"

"मैं कोई तरीका निकालता हूॅ जिससे तुम उसे देख सकोगे।"

कह कर कैमिस्ट उस लड़की की मॉ के पास गया और उससे कहा — "मैम, मेरी दूकान पर एक चित्रकार खड़ा है जो दुनियॉ की बहुत सुन्दर लड़कियों की तस्वीरें बनाने के लिये निकला हुआ है।

वह आपकी बेटी की तस्वीर बनाना चाहता है, अगर आप उसको इजाज़त दें तो। वह आपको इसके लिये **40** सोने के क्राउन[23] देगा।"

मॉ को पैसे की बहुत जरूरत थी सो वह अपनी बेटी के पास गयी और उसको यह सौदा मंजूर करने के लिये कहा। लड़की मान गयी। चित्रकार राजा के दरबारी के साथ आया। तीनों उसे देख कर बोल पड़े "ओह यह तो कितनी सुन्दर है।"

चित्रकार ने उसकी तस्वीर बनायी। उसने उस तस्वीर को कैमिस्ट की दूकान पर पूरा किया और राजा के दरबारी ने उसको सोने के फ्रेम में जड़वा दिया। उसने उस तस्वीर को अपने गले में लटकाया और राजा के सामने पहुँचा।

यही वह समय था जब सबको वैसी लड़कियों की तस्वीरें ले कर राजा के पास पहुँचना था सो राजा के और दरबारी भी वैसी ही तस्वीरें ले कर वहॉ आ गये। सब एक बड़े कमरे में अपनी अपनी गरदनों में अपनी अपनी लायी तस्वीरें लटका कर खड़े हुए थे।

राजकुमार ने सब तस्वीरें देखीं तो वह स्पेन वाली लड़की की तस्वीर के सामने रुक गया और बोला — "अगर इस लड़की का चेहरा ऐसा ही है जैसा इस चित्रकार ने बनाया है तो यह लड़की वैसी ही है जैसी कि मैं चाहता हूँ।"

[23] Crown was the then currency in Europe.

राजा का दरबारी बोला — "अगर यह चेहरा आपको खुश नहीं करता तो फिर आपको कोई और चेहरा कभी खुश नहीं कर सकता।"

राजा का वह आदमी उस लड़की को लाने के लिये दरबार से स्पेन वापस भेज दिया गया। लड़की आयी तो उसको पहले चार महीने महल में रानियों जैसा व्यवहार सीखने के लिये रखा गया।

वह लड़की काफी होशियार थी तो उसने वह सब बहुत जल्दी ही सीख लिया। उसके बाद उसकी शादी एक नकली राजकुमार से कर दी गयी और फिर उसके बाद वह असली राजकुमार के घर आयी।

उसको इतने धार्मिक ढंग से पालने पोसने के लिये उसकी मॉ की बहुत तारीफ की गयी और उस कैमिस्ट को भी इस लड़की के चुनाव में हिस्सा लेने के लिये काफी इनाम दिया गया।

राजकुमार अपने घोड़े पर चढ़ कर उस लड़की से मिलने के लिये पहुॅचा। जब वे मिले तो राजकुमार अपने घोड़े से उतरा और उसकी गाड़ी में बैठ गया। ज़रा सोचो तो कि वे लोग कितने खुश थे।

रानी मॉ ने भी उसको बहुत पसन्द किया। उसने अपने बेटे के कान में फुसफुसाया — "तुमने अपने लिये ठीक पत्नी चुनी है। मुझे उसकी ऑखों की पवित्रता बहुत अच्छी लगी।"

और इसमें कोई शक भी नहीं था कि राजकुमारी बहुत ही पवित्र ज़िन्दगी गुजार रही थी। वह अपने कमरे में ही रहती थी और कभी बाहर नहीं निकलती थी।

उसकी रानी मॉ से भी बहुत अच्छी तरह बनती थी और वे दोनों कबूतर के एक जोड़े की तरह से रहती थीं। यह एक अजीब सी बात थी क्योंकि सास बहू तो हमेशा से सभी जगह झगड़ती ही रही हैं।

पर बीलज़ेबूब[24] तो हमेशा ही कुछ न कुछ इधर उधर की सोचता रहता है। सो एक दिन सास ने बहू से कहा — "बेटी तुम सारे समय इस तरह से घर में ही बन्द क्यों रहती हो। कभी ताजा हवा खाने बाहर छज्जे पर भी जाया करो।"

सो सास के हुकुम से राजकुमारी छज्जे पर गयी। इत्तफाक से उसी समय वहॉ से एक अंग्रेज मीलौर्ड[25] गुजर रहा था। उसने जैसे ही ऊपर की तरफ देखा तो फिर उसकी ऑखें तो नीची होना ही भूल गयीं।

राजकुमारी ने भी उसको देखा तो वह तुरन्त ही अन्दर चली गयी और उसने अपनी खिड़की बन्द कर ली। पर उस नौजवान को अब लड़की की शक्ल देखने से रोकने से महल के चारों तरफ

[24] Beelzebub or Beel-Zebub is a contemporary name for the devil. In Christian and Biblical sources, Beelzebub is another name for the devil. In Christian demonology, he is one of the seven princes of Hell according to Catholic views on Hell.

[25] A European title for a gentleman.

चक्कर काटने से कोई नहीं रोक सका। वह वहाँ अब रोज ही उस घर के चक्कर काटने लगा।

एक दिन एक बुढ़िया उससे भीख माँगने आयी तो उसने उसे डाँट कर भगा दिया — "चली जा यहाँ से ओ बुढ़िया।"

"सरकार क्या बात है?"

"जा न यहाँ से। तुझे क्या मतलब।"

"आप मुझे बताइये तो सरकार। क्या पता मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।"

"बात यह है कि मैं इस राजकुमारी को देखना चाहता हूँ पर देख नहीं पा रहा हूँ।"

"अरे बस यही बात है? आप मुझे एक हीरा जड़ी अंगूठी दीजिये फिर मैं देखती हूँ।"

मीलौर्ड ने तुरन्त ही हीरा जड़ी एक अँगूठी खरीदी और उस बुढ़िया को दे दी। वह उस अँगूठी को ले कर महल में चली गयी। महल के दरवाजे पर महल के चौकीदार ने उसको रोका — "कहाँ जा रही है ओ बुढ़िया?"

बुढ़िया बोली — "मैं राजकुमारी के पास जा रही हूँ। मेरे पास बेचने के लिये एक अँगूठी है जिसे केवल राजकुमारी ही खरीद सकती है।"

राजकुमारी को यह सन्देश भेज दिया गया कि एक बुढ़िया आपको अँगूठी बेचना चाहती है। यह सुन कर राजकुमारी ने उस

बुढ़िया को अन्दर बुला लिया। अँगूठी देख कर उसने बुढ़िया से पूछा — "तुम्हारी इस अँगूठी की क्या कीमत है?"

"**300** क्राउन मैजेस्टी।"

राजकुमारी बोली — "इस बुढ़िया को **300** क्राउन दो दो और **10** क्राउन इसको यहाँ इसे लाने के लिये दो दो।"

वह बुढ़िया राजकुमारी से पैसे ले कर अपने हाथ मलती हुई उस मीलौर्ड के पास आयी।

मीलौर्ड ने पूछा — "राजकुमारी ने तुमसे क्या कहा?"

बुढ़िया बोली — "राजकुमारी ने मुझे **10** दिन में जवाब देने के लिये कहा है।" कह कर उसने किसी को बिना बताये वे **300** क्राउन अपने कपड़ों में खोंस लिये और चली गयी।

10 दिन बाद वह मीलौर्ड के पास लौटी और बोली — "मुझे दस दिन हो गये हैं अब मुझे राजकुमारी के पास जाना है। क्या आप चाहते हैं कि मैं उनके पास खाली हाथ जाऊँ? क्या आपको मालूम है कि इस बार आपको क्या करना चाहिये। अबकी बार आपको उनके लिये एक मँहगा हार भेजना चाहिये।"

लौर्ड तो जैसा कि तुम जानते हो बेताज के बादशाह होते हैं सो उस बुढ़िया ने उससे एक बहुत मँहगा हार खरीदवाया और उसे ले कर राजकुमारी के पास चल दी।

राजकुमारी ने उस हार को देख कर कहा "अरे यह तो वाकई बहुत सुन्दर हार है। इसकी क्या कीमत है?"

"1000 क्राउन।"

राजकुमारी बोली — "इस बुढ़िया को 1000 क्राउन दे दो और 40 क्राउन इसको और दे दो इसे यहाँ तक लाने के लिये।"

बुढ़िया ने वे पैसे लिये और फिर मीलौर्ड के पास आयी।

उसने मीलौर्ड से कहा — "क्या आप विश्वास करेंगे कि अबकी बार उसकी सास भी वहाँ थी इसलिये वह मुझसे बात भी नहीं कर सकी। पर उसने आपकी दी हुई भेंट ले ली है और उसने अगले हफ्ते आपको जवाब देने के लिये कहा है।"

"और अगले हफ्ते तुम उसके लिये क्या भेंट ले जाओगी?"

"सुनिये। आपने उसको एक अँगूठी दे दी है, एक हार दे दिया है। अगली बार हम उसको एक बढ़िया सी पोशाक देंगे।"

सो अगले हफ्ते मीलौर्ड ने राजकुमारी के लिये एक बहुत बढ़िया पोशाक खरीदी और उसको उस बुढ़िया को ले जाने के लिये दी।

अबकी बार बुढ़िया राजकुमारी से बोली — "यह पोशाक मैं बेचने के लिये लायी हूँ। क्या आप इसे खरीदेंगी?"

"यह तो बहुत ही सुन्दर पोशाक है। तुम्हें इसकी क्या कीमत चाहिये?"

"500 क्राउन।"

राजकुमारी ने कहा — "इस बुढ़िया को **500** काउन दे दो और **20** काउन और दे दो इसको यहॉ तक लाने के लिये।"

बुढ़िया ने वह पैसे लिये और फिर मीलौर्ड के वापस आयी तो मीलौर्ड ने उससे पूछा — "अबकी बार क्या कहा उसने?"

बुढ़िया बोली — "इस बार उसने कहा है कि आप अपने महल में एक नाच का इन्तजाम करें और राजकुमार और राजकुमारी को भी उस नाच में बुलायें और फिर सब कुछ वहीं तय हो जायेगा।"

मीलौर्ड तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने एक बहुत शानदार नाच का इन्तजाम किया और राजकुमार को उसमें आने का बुलावा भेजा।

राजकुमारी ने कहा — "ओह यह तो कितना अच्छा है। एक शानदार नाच। मैं तो वही पोशाक पहनूँगी जो मैंने अभी उस बुढ़िया से खरीदी थी।" पर जब वह नाच में गयी तो उसने वही अँगूठी भी पहनी और वही हार भी पहना जो उसने उस बुढ़िया से खरीदा था।

पहले नाच के लिये मीलौर्ड ने राजकुमारी को नाच के लिये बुलाया और ऑखों ही ऑखों में उसको विश्वास दिलाया कि सब कुछ तैयार था। इसके बाद उसने उसकी तरफ ऑख मारी। पर इस पर राजकुमारी घूमी और राजकुमार के बराबर अपनी सीट पर आ कर बैठ गयी।

यह सोचते हुए कि शायद राजकुमारी को कुछ और तारीफ की जरूरत थी मीलौर्ड फिर से उसके पास नाच के लिये बुलाने के लिये

गया और एक बार फिर से उसने उसको ऑख मारी। राजकुमारी फिर से अपनी सीट पर वापस गयी और जा कर राजकुमार के पास बैठ गयी।

मीलौर्ड ने उसको तीसरी बार नाच के लिये बुलाया और एक बार फिर ऑख मारी। इस बार राजकुमारी ने उससे पीठ फेर ली।

जब नाच खत्म हो गया तो राजकुमार और राजकुमारी दोनों ने मीलौर्ड से विदा ली और अपने घर चल दिये। मीलौर्ड वहॉ सोचता ही खड़ा रह गया कि यह सब क्या हो गया।

"हालॉकि उसने वही पोशाक, अॅगूठी और हार पहना हुआ था पर फिर भी उसने मेरे साथ नाचने से मना कर दिया। इसका क्या मतलब है?"

उन दिनों कुछ ऐसा रिवाज था कि राजा लोग वेश बदल कर यह जानने के लिये कैफ़े आदि में जाया करते थे कि लोग उनके बारे में क्या बात करते थे औ उससे यह पता लगाते थे कि वे उनके बारे में क्या सोचते थे ताकि वे अपना काम ठीक से कर सकें।

ऐसे ही एक कैफ़े में राजकुमार का मीलौर्ड से आमना सामना हुआ। वहॉ मीलौर्ड राजकुमार को उस वेश में पहचान नहीं सका सो वे आपस में बात करने लगे।

एक के बाद एक बात निकलती गयी और मीलौर्ड बोला — "उस बेवकूफ राजकुमारी को देखो। मैंने उसको इतनी कीमती अॅगूठी भेजी और उसने उसको स्वीकार कर लिया।

मैंने उसको इतना कीमती हार भेजा वह भी उसने स्वीकार कर लिया। मैंने उसको इतनी कीमती पोशाक भेजी उसने उसको भी स्वीकार कर लिया।

काश तुम जान सकते कि उन चीज़ों पर मैंने कितना पैसा खर्च किया। फिर उसने मुझसे नाच का इन्तजाम करने के लिये कहा तो मैंने वह भी किया पर वह मुझसे पूरी शाम नहीं बोली।"

यह सुन कर राजकुमार का चेहरा लाल पड़ गया। वह अपने महल वापस लौटा। उसने अपनी तलवार निकाली और अपनी पत्नी को ढूँढने चला।

उसकी माँ वहीं बीच में खड़ी थी वह उन दोनों के बीच में बहू की ढाल बन कर खड़ी हो गयी। अब राजकुमार उसको मार तो नहीं सका पर वह राजकुमारी से गुस्सा बहुत था।

उसने अपने एक जहाज़ के कप्तान को बुलाया और उससे कहा — "इस बेवकूफ को अपने जहाज़ पर बिठाओ और इसको समुद्र में ले जा कर मार दो। इसकी जीभ काट कर उसका अचार डाल कर मुझे ला कर दो और उसके शरीर के बाकी सब हिस्से समुद्र में फेंक दो।"

तब तक उस राजकुमारी का कोई और नाम नहीं था। कप्तान बेचारा उस बदकिस्मत राजकुमारी को जहाज़ में ले चला। उसकी सास बहुत दुखी थी वह बेचारी कुछ बोल ही नहीं पा रही थी सो वे

दोनों एक दूसरे से कुछ कहे बिना ही एक दूसरे से अलग हो गयीं। लोग भी सिवाय रोने के और कुछ नहीं कर पाये।

जहाज़ का कप्तान राजकुमारी को जहाज़ में बिठा कर समुद्र में ले तो गया पर वह उसको मार नहीं सका। उसके पास एक कुत्ता था सो उसने उस कुत्ते को मारा और राजकुमार के लिये उसकी जीभ का अचार बना दिया।

जब कई दिनों बाद उसका जहाज़ जमीन के किनारे लगा तो कप्तान ने राजकुमारी को जमीन पर उतारा और उसके लिये बहुत सारी रसद और कपड़ों का इन्तजाम करके वापस चला गया। राजकुमारी वहॉ अकेली खड़ी रह गयी।

वह वहॉ एक गुफा में रहने लगी। धीरे धीरे उसकी रसद खत्म होने लगी। और एक दिन उसका खाना बिल्कुल ही खत्म हो गया। तभी उसको वहॉ एक लड़ाई का जहाज़ दिखायी दिया। राजकुमारी ने उसको इशारा करके बुलाया।

जब उस जहाज के कप्तान ने किसी को इशारा करते देखा तो उसको लगा कि वहॉ जमीन थी सो वे वहॉ उतर गये। उसने राजकुमारी से पूछा — "मैम, आप यहॉ क्या कर रही हैं?"

राजकुमारी बोली — "मैं एक जहाज़ पर थी कि वह जहाज़ तूफान में फॅस कर नष्ट हो गया और मैं अकेली ही बच गयी।"

"मैं आपको कहॉ छोड़ दूॅ?"

राजकुमारी को याद आया कि राजकुमार का बड़ा भाई ब्राज़ील का राजा था और उसकी सास उसके बारे में बहुत अच्छा बोलती थी सो उसने तुरन्त ही जवाब दिया — "ब्राज़ील। आप मुझे ब्राज़ील छोड़ दें वहॉ मेरे एक रिश्तेदार रहते हैं।"

उस जहाज़ के कप्तान ने उसको जहाज़ पर चढ़ाया और ब्राज़ील की तरफ चल दिया।

ब्राज़ील पहुँचने से पहले राजकुमारी ने कप्तान से कहा — "आप मेरी एक सहायता और कर दें। मैं चाहती हूँ कि मेरे रिश्तेदार मुझे न पहचान पायें इसलिये मैं वहॉ एक आदमी के रूप में जाना चाहती हूँ।"

कप्तान ने उसको आदमी के रूप में बदल दिया। उसके बाल काट दिये ओर उसको आदमियों के कपड़े दिलवा दिये। अपनी सुन्दरता की वजह से अब वह राजकुमारी एक सुन्दर नौकर लगने लगी।

ब्राज़ील में उतर कर राजकुमारी सड़कों पर इधर उधर घूमने लगी। तभी उसको एक वकील का दफ्तर दिखायी दिया। वह उस दफ्तर में गयी और वहॉ जा कर पूछा — "क्या मैं आपके यहॉ एक क्लर्क का काम कर सकती हूँ?"

"ओह हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं तुमको कम से कम क्लर्क तो रख ही सकता हूँ।" और उसने उसको अपने दफ्तर में क्लर्क रख लिया। उसने उसको कुछ काम दिया जो उसने पलक झपकते कर

दिया। वकील तो विश्वास ही नहीं कर सका कि कोई क्लर्क वह काम इतनी जल्दी कर सकता था।

फिर उसने उसको और ज़्यादा कठिन काम दिया। उसको भी उसने जल्दी ही खत्म कर दिया। वह वकील उसकी तारीफ किये बिना न रह सका। उसने उसकी तनख्वाह **12** क्राउन रोज की निश्चित कर दी।

यह क्लर्क उस वकील को बहुत अच्छा लगा। उस वकील की एक बेटी थी सो उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी की शादी इस नौजवान क्लर्क से कर देता हूँ। उसने यह बात उस क्लर्क से कही भी।

क्लर्क बोला — "जनाब इस मामले को हम लोग अभी कुछ समय के लिये यहीं रोक लें तो अच्छा रहे। पहले मैं अपने काम में थोड़ी सी जानकारी हासिल कर लूँ तब मैं खुद ही आपसे इस बारे में बात करूँगा।"

धीरे धीरे वकील का नौजवान क्लर्क मशहूर होने लगा। एक बार उसको महल में किसी शाही काम के लिये बुलाया गया। वहाँ उसको एक कागज नकल करने के लिये दिया गया तो वह उसने तुरन्त ही कर दिया और बहुत साफ और सही किया।

इस नौजवान के इस काम की बात बादशाह तक पहुँची तो उसने उस क्लर्क को बुलाया। अब यह बादशाह तो इस क्लर्क के पति का बड़ा भाई था।

बादशाह को तो यह क्लर्क पहली नजर में ही बहुत पसन्द आ गया सो उसने उसको अपने महल में ही रख लिया और अपना स्क्वायर[26] बना लिया।

X X X X X X X

अब हम राजकुमारी को यहीं छोड़ते हैं और राजकुमार के पास चलते है। कुछ दिनों बाद जब राजकुमार का गुस्सा ठंडा हो गया तो वह राजकुमारी के साथ किये गये अपने बरताव के लिये बहुत पछताया।

"हो सकता है कि वह बेकुसूर हो। ओह प्रिये मैं भी कितना बेवकूफ था जो मैंने तुमको ऐसी सजा दी। अब तुम्हारा यहॉ क्या बचा है। मैंने तो तुमको मरवा ही दिया।"

उसके दिमाग में बार बार इसी तरह के ख्याल आने लगे और वह पागल सा हो गया। यह देख कर रानी मॉ ने अपने बड़े बेटे ब्राज़ील के बादशाह को लिखा "तुम्हारा भाई पागल सा हो गया है और देश की जनता में विद्रोह होने वाला है। सो तुम कुछ समय के लिये यहॉ आ जाओ।"

बादशाह यह पढ़ कर बहुत दुखी हुआ और रो पड़ा। उसने अपने स्क्वायर से कहा — "क्या तुम मेरे भाई के पास जाओगे? मैं

[26] Squire – a Squire is a man of high social standing who owns and lives on an estate in a rural area, especially as the chief landowner in such an area.

तुमको उस राज्य का वायसराय[27] बनाता हूँ और वहाँ राज करने की सारी ताकतें देता हूँ।"

स्क्वायर राजी हो गया। उसने बहुत सारे लोग लिये, दो जहाज़ लिये और स्पेन चल दिया। जगह दूर थी। जब वह वहाँ पहुँचा तो सभी लोगों के मुँह से निकला — "ओह वायसराय आ गया, वायसराय आ गया।"

उसके स्वागत में तोपें छोड़ी गयीं। रानी खुद उसको लेने आयी जैसे वह उसका बेटा हो। "आइये वायसराय। ओ योर मैजेस्टी के नौकर, और किसी भी काम को करने से पहले आप अपनी जनता से मिल लें।"

सो वायसराय ने सबसे पहले अपनी जनता के ढेर सारे अधूरे काम देखे। जब वे काम पूरे हो रहे थे तो जनता बहुत खुश थी कि उस जैसा वायसराय उनका राजा बन कर आया है।

जब जनता का काफी काम खत्म हो गया तो वायसराय ने रानी माँ से कहा — "मैजेस्टी, क्या आप मुझे आप अपनी बहू के बारे में कुछ बतायेंगी कि उसके साथ क्या हुआ था?"

---

[27] Viceroy – a viceroy is a regal official who runs a country, a colony, or a city province (or state) in the name of and as the representative of the monarch. The term means "in the place of" and in the French language it means the king.

रानी ने शुरू से ले कर आखीर तक उसको सारी कहानी बता दी – राजकुमार के बारे में, राजकुमार की कैफ़े में हुई बातों के बारे में, अपनी बहू के जाने के बारे में, सब कुछ। और यह सब कहते कहते उसकी ऑखें भर आयीं।

वायसराय बोला — "ठीक है। देखते हैं। आप राजकुमार को बुलाइये जिसने आपको यह सब तकलीफें दी हैं।" राजकुमार को बुलाया गया।

वायसराय ने कहा — "मीलौर्ड, यह किसी की ज़िन्दगी और मौत का मामला है इसलिये आप मुझे बतायें कि आपको राजकुमारी के मामले में क्या कहना है।"

राजकुमार ने जितना सच सच वह बता सकता था बिना कुछ जोड़े और बिना कुछ छिपाये उसको सब बता दिया। वायसराय ने पूछा — "पर राजकुमार क्या आपने कभी उससे खुद भी बात की?"

"नहीं।"

"क्या आपने उसको वे भेंटें खुद दीं?"

"नहीं। वे भेंटें उसको एक बुढ़िया ने दी थीं।"

यह सुन कर रानी मॉ तो आश्चर्यचकित रह गयी क्योंकि उसको तो इस बात का पता ही नहीं था। और साथ में राजकुमार को भी जो अभी तक आधा पागल सा था।

"क्या वह बुढ़िया जिसने वे भेंटें राजकुमारी को दी थीं अभी ज़िन्दा है या मर गयी?"

"शायद वह अभी भी ज़िन्दा होगी।"

वायसराय ने हुकुम दिया कि राजकुमार को एक कमरे में बिठा दिया जाये और उस बुढ़िया को बुलाया जाये। सो राजकुमार को एक कमरे में बिठा दिया गया और बुढ़िया को बुलाया गया।

वायसराय ने बुढ़िया से पूछा — "ये जो चीज़ें तुमने राजकुमारी को बेची थी इसके बारे में कुछ बताओ।" बुढ़िया ने उसे सब कुछ बता दिया।

तो वायसराय ने पूछा — "अब यह बताओ कि क्या तुमने राजकुमारी को कोई सन्देश भी दिया था?"

"नहीं, कभी नहीं।"

यह सुन कर राजकुमार अपने होश में आया। वह बुदबुदाया — "ओह प्रिये, तो तुम तो बिल्कुल बेकुसूर थीं। मैंने तुम्हें बेकार ही मार दिया।" कह कर वह फिर रोने लगा।

वायसराय ने उसको तसल्ली दी। "आप शान्त हों राजकुमार। हम इसका कोई इलाज निकालते हैं।"

"इस मामले का इलाज कैसे निकल सकता है क्योंकि वह तो मर चुकी है। ओह प्रिये, मैंने तो तुमको हमेशा के लिये खो दिया है।"

इस पर वायसराय एक परदे के पीछे गया, राजकुमारी की तरह से तैयार हुआ जो कि वह असल में था, अपने कटे हुए बाल फिर से लगाये, और सास, राजकुमार और दरबार के सामने निकल कर आया।

रानी मॉ उसको देखते ही बोली — "अरे तुम कौन हो?"

"आपकी बहू मॉ जी, आपने मुझे पहचाना नहीं?" पर तब तक तो राजकुमार ने उसको गले ही लगा लिया था।

जब राजकुमारी वायसराय थी बुढ़िया को सजा तो उसने तभी सुना दी थी। उसको फॉसी के तख्ते पर जला कर मार डालना था और मीलौर्ड को उसका गला कटवा कर मरवा दिया गया।

रानी मॉ ने अपने बड़े बेटे को यहॉ का सारा हाल लिखा तो उसने अपने बच्चों से कहा — "अरे बच्चों ज़रा देखो तो। मेरी छोटे भाई की बहू मेरी सेकेटरी थी और मुझे पता भी नहीं चला।"

वे दोनों कप्तान जिसने राजकुमारी की जगह अपना कुत्ता मारा था और जिसने उसको ब्राज़ील पहुॅचाया दोनों को दरबारियों में शामिल कर के तरक्की दे दी गयी। सारे नाविकों को उनकी टोपियों मे लाल फुॅदने लगवा दिये गये।

5 रत्न जड़ा जूता[28]

बुढ़ियों के कारनामों की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार यूरोप के पुर्तगाल देश[29] में एक व्यापारी अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता था – एक बेटा और एक बेटी। वे जब छोटे थे तभी व्यापारी और उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी थी सो वे दोनों भाई बहिन अकेले रह गये।

वह लड़का अपनी बहिन को बहुत प्यार करता था। वह पढ़ लिख कर पुर्तगाल के राजा के यहॉ नौकरी करने लगा था। उसकी लिखाई ऑखों को इतनी सुन्दर लगती थी कि राजा ने उसको अपना सेकेटरी बना लिया था।

अब हुआ यह कि उसके हाथ की लिखी हुई कुछ चिट्ठियॉ स्पेन[30] के राजा के पास पहुॅचीं तो उसके मुॅह से निकला — "कितनी सुन्दर लिखाई है। अगर मुझे यह लिखने वाला मिल जाये तो मैं इसको अपना सेकेटरी बना लूॅ।"

[28] Bejeweled Boot (Story No 159) – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.
[29] Portugal – a European country
[30] Spain – a European country

यह सोच कर उसने पुर्तगाल के राजा को लिखा – "मैंने आपकी चिट्ठी पढ़ी। मैं आपके सेक्रेटरी की सुन्दर लिखावट देख कर बहुत खुश हुआ।

हमारी दोस्ती की खातिर जिसने हमको बॉध रखा है मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस चिट्ठी लिखने वाले को मुझे दे दें। मैं उसे अपना सेक्रेटरी बनाना चाहता हूँ। स्पेन में कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इतना सुन्दर लिखता हो।"

ये दोनों राजा लोग एक दूसरे के बड़े अच्छे दोस्त थे इसलिये हालॉकि पुर्तगाल का राजा अपना सेक्रेटरी किसी को देना नहीं चाहता था फिर भी उसने अपने सेक्रेटरी को अपने दोस्त स्पेन के राजा के पास भेज दिया।

जाते समय उस नौजवान ने पूछा — "योर मैजेस्टी, मैं अपनी बहिन का क्या करूँ? मैं उसको इस तरह अकेले छोड़ कर तो नहीं जा सकता।"

राजा बोला — "डौन जियूसैप[31]। मैं यह तो नहीं बता सकता। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि तुमको वहॉ जाना है। तुम्हारी बहिन एक अच्छी लड़की है और मेरे ख्याल में वह अपनी देखभाल अपने आप कर सकती है। तुम अपनी नौकरानी को बोल जाओ कि वह उस पर नजर रखे। फिर तुमको उसकी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

[31] Don Giuseppe – the name of the son of the trader

अब उस नौजवान के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी बहिन को यह सब बता दे।

उसने उसको लिखा — "प्यारी बहिन मामला कुछ ऐसा आ गया है कि मुझे पुर्तगाल से स्पेन जाना पड़ रहा है। स्पेन का राजा मुझे अपना सेक्रेटरी बनाना चाहता है।

तुम मेरे पीछे नौकरानी के साथ अकेली रह जाओगी। मैं जब वहाँ ठीक से रहने लगूँगा तब मैं तुमको वहाँ बुला लूँगा।"

यह पढ़ कर उसकी बहिन तो रोने लगी। उसने आगे पढ़ा — "हम लोग एक दूसरे को इतना दूर न महसूस करें इसलिये हम लोगों को अपनी अपनी तस्वीरें बनवा लेनी चाहिये। मैं तुम्हारी तस्वीर ले जाऊँगा और तुम मेरी तस्वीर रख लेना।"

और फिर उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने एक दूसरे की तस्वीरें बनवा लीं और वह लड़का अपनी बहिन की तस्वीर ले कर स्पेन चला गया।

स्पेन के राजा ने उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया और तुरन्त ही उसको लिखने के काम पर लगा दिया। वह खुद खड़े हो कर उसकी सुन्दर लिखाई देखता रहता और मन ही मन उसकी तारीफ करता रहता।

वह अपने नये सेक्रेटरी को इतना चाहने लगा कि उसके राज्य में अब जब भी कोई समस्या होती तो वह उसी से कहता — "डौन

जियूसैप, तुम ही देख लो इसको। तुम्हारे ऊपर मुझे पूरा विश्वास है। अपनी समझ से जो भी तुम करोगे ठीक ही करोगे।"

इस सबका नतीजा यह हुआ कि राजा के दरबारियों में उसके लिये बहुत जलन पैदा हो गयी – कुलीन लोग, राजा का पुराना सेक्रेटरी, नाइट आदि सभी उससे जलने लगे।

एक दिन उन सबने मिल कर डौन जियूसैप की इज़्ज़त को मिट्टी में मिलाने का प्लान बनाया।

एक कुलीन आदमी राजा के पास गया और बोला — "मैजेस्टी, आपने लिखने के लिये तो बहुत अच्छा आदमी ढूँढ लिया है। आप समझ गये होंगे कि मैं डौन जियूसैप के बारे में बात कर रहा हूँ जिसकी तारीफ करते करते आप थकते नहीं। पर क्या आपको पता है कि आपके पीछे आपके विश्वास की आड़ में वह छिपे छिपे वह क्या कर रहा है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? क्या मामला है? मुझे साफ साफ बताओ कि तुम क्या कहना चाहते हो।"

"क्या मामला है और मैं क्या कहना चाहता हूँ? बात यह है कि रोज वह कमरे में एक तस्वीर ले कर जाता है। वह उसको देखता रहता है। उसको चूमता है और रोता है। और फिर वह उसको छिपा कर रख देता है।"

राजा ने यह सुन कर सोचा कि वह इस मामले की जॉच खुद ही करेगा। एक दिन राजा डौन जियूसैप के कमरे में गया और वहॉ अचानक ही पहुॅच कर उसको आश्चर्यचकित कर दिया। उस समय वह उस तस्वीर को चूम रहा था।

राजा ने पूछा — "क्या मैं पूछ सकता हूॅ कि यह तुम किसे चूम रहे थे, डौन जियूसैप?"

डौन जियूसैप बोला — "यह मेरी बहिन की तस्वीर है मैजेस्टी।"

राजा ने उस तस्वीर की तरफ देखा तो वह उसको बहुत सुन्दर लगी। वह उस तस्वीर वाली लड़की से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। डौन जियूसैप ने फिर राजा को उसके बारे में और भी बहुत कुछ बताया। उसने उसके और भी कई सारे गुण बखान किये।

वहॉ वह कुलीन आदमी भी मौजूद था जो डौन जियूसैप को गलत साबित करने से अपने आपको रोक नहीं सका।

उसने राजा के पीछे से उस तस्वीर को देखा और बोला — "कौन? यह स्त्री? इसको तो मैं जानता हूॅ मैजेस्टी। मैं तो इसके साथ बातचीत भी कर चुका हूॅ।"

नौजवान आश्चर्य से बोला — "क्या? मेरी बहिन से? और तुम बातचीत कर चुके हो? पर वह तो घर के बाहर कभी गयी ही नहीं। तुमने उससे कैसे बात कर ली जबकि उसे तो अभी तक किसी ने देखा भी नहीं?"

"हॉ हॉ, मैं सच कह रहा हूँ कि मैंने उससे बात की है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।"

जब दोनों में काफी बहस होने लगी तो राजा बीच में बोला — "इस मामले का हम एक बार ही फैसला कर देते हैं। ओ कुलीन आदमी, अगर यह सच है कि तुमने डौन जियूसैप की बहिन से बात की है तो हम तुमको एक महीना देते हैं कि तुम हमको यह बात साबित करके दिखाओ कि तुमने उससे बात की है।

अगर तुमने यह साबित कर दिया कि तुमने डौन जियूसैप की बहिन से बात की है तो डौन जियूसैप का सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा। और अगर तुम इस बात को साबित नहीं कर सके तो फिर तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

अब शाही हुकुम तो शाही हुकुम है और आखिरी फैसला है।

यह सुन कर वह कुलीन आदमी वहॉ से चला गया। जब वह पलेरमो पहुँचा तो उसने इस लड़की के बारे में हर एक से पूछना शुरू किया तो हर एक ने यही कहा कि वह है तो बहुत सुन्दर पर उसको देखा किसी ने नहीं है क्योंकि वह कभी घर से बाहर ही नहीं निकली।

दिन पर दिन बीतते गये और उस कुलीन आदमी को कुल्हाड़ी रोज अपनी गरदन के और पास आती दिखायी देती रही।

यही सोचते हुए और अपने हाथ मलते हुए वह एक शाम को डौन जियूसैप के घर के आस पास घूम रहा था और साथ में

बुड़बुड़ाता जा रहा था कि "मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?" कि तभी एक बुढ़िया ने उसको चौंका दिया।

उस बुढ़िया ने उससे कहा — "मेहरबानी करके मुझे कुछ खाने को दो मैं बहुत भूखी हूँ।"

"जाओ भागो यहाँ से।"

"मुझे कुछ दे दो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

"मुझे एक ऐसे आदमी से मिलना है जो मेरी अभी अभी सहायता कर सके।"

"तुम मुझे अपनी परेशानी बताओ तो मैं तुम्हारी सहायता करने की पूरी पूरी कोशिश करूँगी।"

सो उस कुलीन आदमी ने उसको सब कुछ बता दिया।

"अरे बस इतना ही। तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो और सोच लो कि तुमको इस बात का सबूत मिल गया।"

उस रात बहुत ज़ोर की बारिश हुई और बिजली चमकी और बादल गरजे। वह बुढ़िया डौन जियूसैप के घर के सामने वाले दरवाजे के सहारे लग कर खड़ी हो गयी।

वह ठंड से काँप रही थी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी। उसके रोने की आवाज सुन कर घर की मालकिन यानी डौन जियूसैप की बहिन ने अपनी नौकरानी से कहा — "बेचारी बुढ़िया, उसको घर के अन्दर ले आओ। लगता है उसको बहुत ठंड लग रही है।"

सो घर का दरवाजा खुला और वह बुढ़िया घर के अन्दर घुसी। "ओह मैं तो ठंड की वजह से जमी जा रही हूँ।"

मालकिन ने उसको आग के पास बिठाया और उसको खाना खिलाया। उस चालाक बुढ़िया ने यह सब देख लिया कि घर की मालकिन कहाँ सोती थी।

जब वह मालकिन शाम के तूफान से थकी सोने चली गयी और गहरी नींद सो गयी तो वह बुढ़िया उठ कर दबे पाँव उसके सोने के कमरे में गयी और उसकी ओढ़ने की चादर उठा कर उसको सिर से पाँव तक ध्यान से देखा।

उसने देखा कि उसके दाँये कन्धे पर तीन सुनहरे बाल उगे हुए थे। उसने एक छोटी कैंची से उन बालों को काट लिया और अपने रूमाल में बाँध लिया। फिर उसने उसको चादर से ढक दिया और अपने बिस्तर पर चली आयी।

कुछ देर बाद वह हिली डुली और फिर से रोना शुरू कर दिया। रोते रोते बोली — "ओह मेरा तो यहाँ कुछ दम सा घुट रहा है मैं ज़रा बाहर जाना चाहती हूँ।"

मालकिन उठी और अपनी नौकरानी से कहा कि वह उसको बाहर छोड़ दे नहीं तो वे दोनों रात भर नहीं सो पायेंगे।

वह कुलीन आदमी डौन जियूसैप के महल के आगे बेचैनी से तेज़ तेज़ चक्कर काट रहा था। तभी वह बुढ़िया घर से बाहर

निकली और उसको तीन बाल दे कर और अपना इनाम ले कर वहाँ से चली गयी।

अगले दिन वह कुलीन आदमी जहाज में बैठ कर स्पेन वापस चला गया। स्पेन पहुँच कर वह तुरन्त राजा के पास पहुँचा और बोला — "मैजेस्टी, यह है डौन जियूसैप की बहिन की पहचान – उसके दाँये कन्धे पर उगे तीन सुनहरे बाल।"

डौन जियूसैप अपना चेहरा अपने हाथों से ढकते हुए बोला — "उफ़ यह तो मेरे लिये एक बहुत बड़ी मुसीबत हो गयी।"

राजा डौन जियूसैप से बोला — "अब मैं तुमको अपनी सफाई देने के लिये एक महीने का समय देता हूँ नहीं तो मेरे चौकीदार मेरा हुकुम बजा लायेंगे।"

चौकीदार आये और उन्होंने डौन जियूसैप को पकड़ कर जेल में डाल दिया। वहाँ उसको खाने के लिये केवल एक डबल रोटी का टुकड़ा और पीने के लिये केवल एक गिलास पानी रोज मिलता था।

पर जेलर ने यह देख कर कि यह कैदी कितना अच्छा आदमी था वह दूसरे कैदियों के खाने में से कुछ खाना निकाल कर उसको दे दिया करता था।

इसमें बस अब सबसे ज़्यादा परेशानी डौन जियूसैप को यह थी कि वह अपनी बहिन को एक लाइन भी नहीं लिख सकता था।

क्योंकि जेलर उसके ऊपर मेहरबान था इसलिये एक दिन उसने जेलर से एक प्रार्थना की — "क्या तुम मुझे मेरी बहिन को एक

छोटी सी चिट्ठी लिखने दोगे? फिर चाहो तो तुम खुद ही उसको डाकखाने में डाल देना।"

जेलर एक बड़े दिल वाला आदमी था सो उसने उसको अपनी बहिन को एक चिट्ठी लिखने की इजाज़त दे दी। डौन जियूसैप ने अपनी बहिन को एक चिट्ठी लिखी और उसमें उसने वह सब लिखा जो वहॉ हो रहा था और कैसे वह उसकी वजह से मरने वाला था।

उसने चिट्ठी लिख कर जेलर को दे दी और जेलर ने उससे वह चिट्ठी ले कर डाकखाने में डाल दी।

उधर बहिन ने जब अपने भाई के बारे में अब तक कुछ नहीं सुना था तो वह उसकी चिट्ठी पा कर बहुत खुश हुई और जल्दी से उसे खोल कर पढ़ा।

चिट्ठी पढ़ कर तो वह रो पड़ी — "ओह मेरा प्यारा छोटा भाई। हमारे ऊपर यह क्या मुसीबत आ पड़ी।" उसने तुरन्त ही सोचना शुरू कर दिया कि वह अपने भाई की कैसे सहायता कर सकती थी।

काफी सोच विचार के बाद उसने अपना घर और अपने घर की सारी चीज़ें बेच दीं और उनसे जितने भी जवाहरात वह खरीद सकती थी खरीद लिये।

उन जवाहरातों को ले कर वह एक सुनार के पास गयी और उससे कहा कि वह उन सारे जवाहरातों को जड़ कर उसके लिये एक जोड़ी जूता बना दे।

फिर उसने एक काली पोशाक खरीदी जिसको शोक के मौके[32] पर पहनते हैं और स्पेन चल दी।

जब वह स्पेन पहुँची तो वहाँ उसने बिगुलों की आवाजें सुनी। उसने देखा कि कुछ सिपाही लोग एक आदमी की ऑखों पर पट्टी बॉध कर उसे फॉसी के तख्ते की तरफ लिये जा रहे हैं।

अपनी काली पोशाक पहने हुए, एक पैर में मोजा पहने हुए और दूसरे पैर में एक रत्न जड़ा जूता पहने हुए वह उस भीड़ में चिल्लाती हुई घुस गयी — "मैजेस्टी रहम करिये, मैजेस्टी रहम करिये।"

एक इतनी सुन्दर लड़की को काली शोक वाली पोशाक पहने, एक पैर मे केवल मोजा पहने और दूसरे पैर में केवल एक रत्न जड़ा जूता पहने देख कर भीड़ के लोगों ने उसके लिये अन्दर जाने के लिये जगह छोड़ दी।

राजा ने उसकी बात सुनी। उसने अपने सिपाहियों को कहा कि वह उस लड़की को कुछ न कहें और उसको उसके पास तक आने दें। उसने उस लड़की से पूछा कि क्या बात है। उसको क्या चाहिये।

वह लड़की बोली — "रहम करें और न्याय करें मैजेस्टी, रहम करें और न्याय करें।"

"हम वायदा करते हैं कि हम न्याय करेंगे। बोलो।"

[32] In Christians people wear black clothes on the occasion of death ceremony.

लड़की बोली — "मैजेस्टी, आपके राज्य का एक कुलीन आदमी मेरे साथ बात करके मेरा एक ऐसा जूता जिसमें हीरे जवाहरात जड़े थे चोरी करके ले गया है।" कहते हुए उसने राजा को अपने पैर में पहना हुआ दूसरा जूता दिखा दिया।

यह देख कर राजा की तो बोलती बन्द हो गयी। उस कुलीन आदमी को बुलवाया गया।

उसने उस कुलीन आदमी की तरफ देखा और उससे पूछा — "तुम इतनी नीच हरकत कैसे कर सके ओ कुलीन आदमी? तुमने तो उससे बातचीत करने के बाद उसका जूता ही चुरा लिया और अब तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मेरे सामने खड़े हुए हो?"

वह कुलीन आदमी तो अब जाल में फॅस चुका था। उसको झूठ बोलना ही पड़ा। उसने तुरन्त जवाब दिया — "पर मैजेस्टी, इस लड़की को तो मैंने कभी देखा ही नहीं।"

लड़की बोली — "इसका क्या मतलब है कि तुमने मुझे कभी देखा ही नहीं है। तुम जो कुछ कह रहे हो सोच समझ कर कहो।"

वह कुलीन आदमी बोला — "मैं कसम खाता हूॅ मैंने इस लड़की को पहले कभी नहीं देखा।"

लड़की फिर बोली — "अगर ऐसा है तो तुमने पहले यह क्यों कहा था कि तुमने मुझसे बातचीत की है?"

"पर मैंने यह कहा ही कब?"

"यह सब तुमने तब कहा था जब तुमने यह कसम खायी थी कि तुम डौन जियूसैप की बहिन को जानते हो और तुमने उससे बातें की हैं। क्या तुमने वह सब उसको मारने के लिये नहीं कहा था?"

उसके बाद उसने राजा को बताया कि वह डौन जियूसैप की बहिन थी।

उस कुलीन आदमी को अपना जुर्म कुबूल करना ही पड़ा। बहिन को बेकुसूर देख कर राजा ने डौन जियूसैप को छोड़ दिया और उसे अपने पास बिठा लिया।

और उसके बदले उस कुलीन आदमी की ऑखों पर पट्टी बॉध कर उसको फॉसी के तख्ते की तरफ ले जाया गया। दोनों भाई बहिनों के आपस में गले मिल कर खुशी के ऑसू निकल आये।

राजा ने हुकुम दिया — "सिर काट दो इस कुलीन आदमी का।" और उस कुलीन आदमी का सिर वहीं उसी समय काट दिया गया।

राजा उन भाई बहिन को साथ ले कर महल लौटा और बहिन की सुन्दरता को देख कर उसने उससे शादी कर ली।

6 कप्तान और जनरल[33]

बुढ़ियों के कारनामों की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली के सिसिली टापू पर एक राजा रहता था जिसके एक ही बेटा था। इस राजकुमार की शादी राजकुमारी टैरैसीना[34] से हुई थी।

जब उनकी शादी का जश्न खत्म हो गया तो राजकुमार एक कमरे में बहुत दुखी और चिन्ता में बैठ गया। उसकी पत्नी ने पूछा — "क्या बात है आप इतने दुखी और चिन्तित क्यों हैं?"

राजकुमार बोला — "प्रिय टैरैसीना, मैं सोच रहा था कि हम लोगों को एक कसम खानी चाहिये कि हममें से जो कोई भी पहले मरे दूसरा उसको उसकी कब्र में तीन दिन और तीन रात तक उसे जगाये।"

टैरैसीना बोली — "अरे बस इतनी सी बात है जो आपको परेशान कर रही है?"

उसने तुरन्त राजकुमार की तलवार उठायी और दोनों ने उसकी मूठ पर बने क्रास को चूम कर यह कसम खायी — "हममें से जो

[33] The Captain and the General (Story No 179) - a folktale from Italy from its Province of Agrigento. Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980

[34] Princess Teresina

कोई भी पहले मरे दूसरा उसको उसकी कब्र में तीन दिन और तीन रात तक उसे जगाये।"

एक साल बाद राजकुमारी टैरैसीना बीमार पड़ गयी और मर गयी। राजकुमार ने उसको बड़ी शानो शौकत के साथ दफनाया।

उस रात उसने अपनी तलवार उठायी, दो पिस्तौल लीं और सोने चॉदी के सिक्कों से भरा एक थैला ले कर चर्च चला गया। वहॉ उसने चर्च के रखवाले को कहा कि वह उसको राजकुमारी की कब्र में उतार दे।

उसने चर्च के रखवाले से यह भी कहा — "आज से तीन दिन बाद तुम यहॉ आना और कब्र में से कोई आवाज सुनना। अगर मैं खटखटाऊॅ तो तुम कब्र खोल देना और अगर रात होने तक मैं न खटखटाऊॅ तो समझ लेना कि मैं फिर कभी वापस नहीं आऊॅगा।"

फिर उसने उस चर्च के रखवाले को उसके इस काम के लिये **100** क्राउन[35] दिये और कब्र में अन्दर चला गया। चर्च के रखवाले ने कब्र ऊपर से बन्द कर दी।

जब वह कब्र में बन्द हो गया तो उसने ताबूत खोला तो अपनी पत्नी की लाश देख कर रो पड़ा। वह वहॉ रात भर रोता रहा। उसकी पहली रात वहॉ इस तरह गुजरी।

[35] The then currency in Italy.

दूसरी रात को उसे उस कब्र के पीछे की तरफ एक सॉप के फुंकार मारने की आवाज सुनायी दी और एक बड़ा और भयानक सॉप वहॉ निकल आया। उसके पीछे उसके कुछ बच्चे सॉप भी थे।

उस सॉप ने मुँह खोल कर उसकी पत्नी को काटने की कोशिश की पर राजकुमार ने अपनी पिस्तौल उसकी तरफ करके उसके ऊपर गोली चला दी।

पिस्तौल की गोली से बड़ा सॉप तो मर गया पर उसकी गोली चलने की आवाज सुन कर बच्चे सॉप भाग गये। राजकुमार बड़े मरे हुए सॉप के साथ वहीं कब्र में ही रहा।

कुछ देर में ही वे बच्चे सॉप अपने अपने मुँहों में कुछ घास की पत्तियॉ ले कर वापस आ गये। वे सब उस मरे हुए सॉप को चारों तरफ से घेर कर उसके घावों पर वह घास की पत्तियॉ फेरने लगे। उन्होंने घास की कुछ पत्तियॉ उसके मुँह में रखीं, कुछ उसकी ऑखों पर रखीं और कुछ उसके शरीर पर मलीं।

कुछ ही पल में उस मरे हुए सॉप ने ऑखें खोल दीं। वह कुछ हिला डुला और फिर से वैसा ही हो गया जैसा मरने से पहले था। वह तो एक बार फिर से जी गया था। ज़िन्दा हो कर वह सॉप और उसके बच्चे वहॉ से भाग गये।

अपनी लायी हुई घास वे बच्चे वहीं छोड़ गये थे। राजकुमार ने तुरन्त ही वह घास उठा ली और उसने भी उसमें से कुछ घास अपनी पत्नी के मुँह में रखी और कुछ उसके शरीर पर बिखेर दी।

लो उसकी तो साँस वापस आने लगी। उसके चेहरे का रंग भी वापस आ गया। वह उठ बैठी और बोली — "ओह, मैं इतनी देर तक कैसे सोती रही।"

खुशी के मारे राजकुमार ने उसको गले लगा लिया और फिर तुरन्त ही उन्होंने उस छेद को ढूँढना शुरू किया जिसमें वे साँप गायब हो गये थे। वह छेद इतना बड़ा था कि वे दोनों उसके अन्दर जा सकते थे सो दोनों उस छेद के अन्दर घुस गये।

दूसरी तरफ वे उस साँप घास वाले मैदान में निकल आये जिसमें वे साँप गायब हुए थे। राजकुमार ने उस मैदान में से बहुत सारी घास तोड़ ली और उसको ले कर वे दोनों घर वापस आ गये। फिर वे पेरिस[36] चले गये और वहाँ नदी के किनारे एक महल किराये पर ले कर रहने लगे।

कुछ समय बाद राजकुमार ने एक सौदागर बनने का निश्चय किया। उसने अपनी पत्नी को एक अच्छे आचार विचार वाली स्त्री के पास छोड़ा जो उसकी उसके घर के कामों में सहायता कर सके। फिर उसने एक जहाज़ खरीदा और व्यापार के लिये चल दिया।

[36] Paris is the capital of France, an European country.

उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह एक महीने में लौट आयेगा और अपने आने की सूचना देने के लिये वह तीन खाली तोप छोड़ेगा।

जैसे ही राजकुमार वहाँ से गया नैपिल्स[37] की सेना का एक कप्तान सड़क पर जा रहा था कि उसने टैरैसीना को खिड़की पर खड़े देखा। उसने टैरैसीना से बात करनी चाही पर टैरैसीना वहाँ से चली गयी।

यह देख कर कप्तान ने एक बुढ़िया को बुलाया और उससे कहा — "मैम, अगर आप मुझे उस प्यारी सी लड़की से मिलवा दें जो इस महल में रहती है तो मैं आपको **200** क्राउन[38] दूँगा।"

वह बुढ़िया टैरैसीना के महल में गयी और उससे सहायता माँगी कि कुछ लोग उसका सामान छीनना चाहते थे।

उसने कहा — "मेरे पास सामान से भरी एक आलमारी है और वे उसको ले लेना चाहते हैं। क्या आप मेरे ऊपर इतनी दया करेंगी कि आप उसको अपने पास रख लें?"

टैरैसीना राजी हो गयी। बुढ़िया तीन आलमारियाँ उसके पास ले आयी और टैरैसीना ने उनको अपने महल में रख लिया।

रात को उन आलमारियों में से एक आलमारी में से कप्तान निकला, टैरैसीना को पकड़ा और अपने जहाज़ पर ले गया। वे

[37] Naples is a historical port city on the South-Western coast of Italy

[38] The then currency of Italy.

नैपिल्स चले गये जहॉ टैरैसीना अपने पति को भूल कर कप्तान के साथ उसकी पत्नी की तरह से रहने लगी।

एक महीने बाद राजकुमार का जहाज़ नदी में वापस आया तो उसने अपने आने की खबर देने के लिये तीन खाली तोपें चलायीं। पर उसको अपने महल के छज्जे पर अपनी पत्नी दिखायी नहीं दी। उसका घर भी खाली पड़ा था और वहॉ उसका कोई निशान भी नहीं था।

राजकुमार ने अपना सब कुछ बेच दिया और दुनियॉ भर में घूमता फिरा। आखीर में वह नैपिल्स आया और वहॉ एक सिपाही की नौकरी करने लगा।

एक दिन वहॉ के राजा ने सेना की एक बहुत ही शानदार परेड का इन्तजाम किया जिसमें सब सिपाहियों को हिस्सा लेना था। उसी में वह कप्तान भी अपनी पत्नी साथ चल रहा था जो टैरैसीना को ले कर आया था।

सिपाही बने राजकुमार ने टैरैसीना को पहचान लिया और टैरैसीना ने सिपाही बने राजकुमार को पहचान लिया। टैरैसीना ने कप्तान से कहा — "देखो, उन सिपाहियों में वह मेरे पति हैं। अब मैं क्या करूँ।"

कप्तान ने उस सिपाही की तरफ इशारा करते हुए अपनी पत्नी से कहा — "हॉ यह सिपाही मेरे साथ था और अभी अभी उसकी तरक्की हुई है।"

कप्तान ने उसको और कई और लोगों को अपने घर खाने के लिये बुलाया जिसमें टैरैसीना नहीं आयी। जब वे खाना खा रहे थे तो कप्तान ने एक चॉदी का चाकू और कॉटा राजकुमार की जेब में रख दिया।

कुछ देर बाद एक चाकू और कॉटा कम पाया गया तो उसकी खोज शुरू हुई। खोज करने पर वह उस सिपाही की जेब में पाया गया। उसका कोर्ट मार्शल हो गया और उसको बन्दूक से गोली मार कर मारने की सजा सुना दी गयी।

जो सिपाही उसको मारने वाले थे उनमें से एक सिपाही उसका दोस्त था। उसने अपने उस दोस्त को थोड़ी सी घास दी और कहा — जब तुम मुझ पर गोली चलाओ तो बहुत सारा धुँआ बनाने की कोशिश करना। जब दूसरे सिपाही अपने कन्धे पर बन्दूक रख कर जा रहे हों तो तुम यह थोड़ी सी घास मेरे मुँह में और मेरे घावों पर रख देना और मुझे छोड़ कर चले जाना।"

समय पर उस पर गोली चलायी गयी। उसके दोस्त ने काफी सारा धुँआ छोड़ा और उस धुँए की आड़ में उसने अपने दोस्त सिपाही के मुँह में और घावों पर थोड़ी थोड़ी घास रख दी। कुछ ही देर में राजकुमार ज़िन्दा हो गया और वहॉ से उठ कर भाग गया।

इधर नैपिल्स के राजा की बेटी कुछ दिनों से इतनी बीमार थी कि बस मरने वाली थी। कोई भी डाक्टर उसके लिये कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

राजा ने अपने पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी थी कि "जो कोई भी मेरी बेटी को ठीक करेगा अगर वह कुआँरा होगा तो मैं अपनी बेटी की शादी उससे कर दूँगा और अगर वह शादीशुदा होगा तो फिर मैं उसको राजकुमार बना दूँगा।"

यह घोषणा सुन कर राजकुमार ने एक डाक्टर का वेश रखा, अपनी थोड़ी सी घास उठायी और शाही महल चल दिया। वहाँ उसने एक बहुत बड़ा कमरा जिसमें बहुत सारे डाक्टर बैठे थे पार किया और राजा की बीमार बेटी के पास पहुँच गया। तभी तभी उसने अपने आखिरी साँस ली थी।

राजकुमार ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, आपकी बेटी तो अब मर ही गयी है पर मेरे पास इसको जिलाने का अभी भी एक तरीका है अगर आप मुझे इसके साथ अकेला छोड़ दें तो।"

उसको वहाँ अकेला छोड़ दिया गया। उसने थोड़ी सी घास उस राजकुमारी के मुँह और नाक में रखी तो उसने फिर से साँस लेना शुरू कर दिया और कुछ ही पल में वह बिल्कुल ठीक हो गयी।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "डाक्टर अब तुम मेरे दामाद[39] हो।"

राजकुमार बोला — "मुझे अफसोस है राजा साहब कि मैं आपका दामाद नहीं बन सकता मैं पहले से ही शादीशुदा हूँ।"

"तो फिर तुम्हें क्या चाहिये?"

[39] Translated for the word "Son-in-Law".

"मैं आपकी सारी सेना का जनरल कमान्डर बनना चाहता हूँ।"

"ठीक है।" और राजा ने दो शानदार मौके मनाने का हुकुम दे दिया। पहला तो अपनी बेटी के ज़िन्दा होने का और दूसरा नये जनरल की नियुक्ति का।

इस मौके पर उसने अपने सब कप्तानों को बुलाया तो वह कप्तान भी आया जिसने उस राजकुमार की पत्नी को भगा लिया था। अब यह जनरल भी सोने के चाकू और कॉटे कप्तान की जेब में रखना नहीं भूला और इस चोरी की वजह से कप्तान को जेल में डाल दिया गया।

जनरल उस कप्तान से पूछने गया — "तुम अकेले हो या शादीशुदा?"

कप्तान बोला — "जनरल साहब, अगर मैं सच कहूँ तो मैं तो शादीशुदा हूँ ही नहीं। मैं तो अकेला ही हूँ।"

"फिर वह स्त्री कौन है जो उस दिन तुम्हारे साथ थी?"

उसी पल दो सिपाही उस स्त्री को भी हथकड़ी पहना कर वहाँ ले आये जो उस कप्तान के साथ रह रही थी। वह आते ही चिल्लायी — "नहीं नहीं इस कप्तान ने तो मुझे मेरे महल से भगा लिया था। मैं तो आपको कभी भूली ही नहीं थी।"

पर उसकी ये सब बातें बेकार गयीं। जनरल ने उन दोनों को कीचड़ में लपेटने और फिर जला कर मार डालने का हुकुम दे

दिया। कई बार अदालत में पेश होने के बाद वह पूरी सेना का जनरल कमान्डर घोषित कर दिया गया।

7 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा[40]

बुढ़िया के कारनामे की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक ही बेटा था। सब उसके साथ बुरा बरताव करते थे और उसको अपने पास से भगा देते थे। यहॉ तक कि आस पास से जाने वाले भी उसकी तरफ देखना पसन्द नहीं करते थे।

राजकुमार ने सोचा और सोचा और सोचा कि क्या किया जाये। आखिर वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपना तीर कमान लिया और अपने पिता के महल से चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल में आ गया। वहॉ उसने एक अच्छी सी जगह चुन कर अपने लिये मिट्टी की एक झोंपड़ी बनायी और उसमें रहने लगा।

वह रोज शिकार करने जाता और रोज ही कोई न कोई बारहसिंगा या फिर कोई हिरन मार कर घर ले आता। उसमें से काफी सारा मॉस खाने के बाद में भी उसके पास अगले दिन के लिये काफी मॉस बच जाता पर वह उसको अगले दिन खाता नहीं था। क्योंकि वह अगले दिन वह फिर शिकार के लिये जाता था।

---

[40] The Fox and the King's Son (Tale No 15) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

इस तरह से उसके पास बहुत सारा मॉस बचा पड़ा था। एक लोमड़ा यह सब देख रहा था। रोज जब राजकुमार शिकार करने के लिये चला जाता तो वह उसकी झोंपड़े में जाता और उसका बचा हुआ सारा खाना खा जाता। और फिर वहॉ से चुपचाप चला आता।

कुछ दिनों तक ऐसे ही चलता रहा। एक दिन लोमड़े ने सोचा "इस तरह से मॉस चुराने में न तो कोई मजा है और न ही कोई बहादुरी कि मैं उसका सारा मॉस इस तरह छिप कर ले आता हूँ और फिर भी बहुत सारा पड़ा रह जाता है। मुझे उसको अपने आपको दिखाना चाहिये।"

सो एक बार जब राजकुमार शिकार के लिये गया हुआ था तो वह लोमड़ा उसके घर में घुस गया। वहॉ जा कर पहले उसने मॉस खाया और फिर उसकी झोंपड़ी में रखी उसकी सब चीज़ें ठीक करके रखने लगा।

जब राजकुमार घर आया तो वह उसके सामने ही वहॉ से कूद कर बाहर भागने लगा। पर राजकुमार भी कोई सुस्त नहीं था। उसने तुरन्त अपनी कमान निकाली और उस पर तीर रख कर चलाने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "मुझे मत मारो। मैं तुम्हारी तुम्हारी किस्मत बनाने में सहायता करूँगा।"

सो राजकुमार का हाथ रुक गया और उसने लोमड़े को नहीं मारा। अब लोमड़ा राजकुमार के घोड़े की देखभाल करता और

उसको घास चराता। इस तरह से रहते रहते उन्हें कुछ समय बीत गया।

लोमड़ा उसकी आग जलाता उसकी झोंपड़ी की सफाई करता और घर का सब काम करता। इस सबके बाद भी राजकुमार का लाया काफी मॉस बच जाता।

एक दिन लोमड़ा बोला — "मैं जा कर किसी को ढूँढ कर लाता हूँ जो इस मॉस को खाने में हमारी सहायता करे।"

सो वह बाहर गया और एक भेड़िये को देखा जो भूख के मारे इतना कमजोर हो गया था कि वहा जहॉ था वहॉ से बहुत मुश्किल से हिल पा रहा था।

लोमड़ा बोला — "आओ मेरे साथ मेरे घर चलो। वहॉ तुमको हर चीज़ बहुत सारी मिलेगी।" भेड़िया उसके पीछे पीछे चल दिया।

दोनों झोंपड़ी में आये तो लोमड़े ने भेड़िये से कहा — "मैं घर की सफाई करता हूँ तुम यहीं ठहरो जब मालिक आ जायें तो तुम उनके घोड़े की देखभाल करना।"

कुछ देर बाद राजकुमार आ गया। उसके घोड़े की जीन से एक बारहसिंगा लटक रहा था। भेड़िया उसको देखते ही घोड़े की देखभाल के लिये कूद पड़ा।

राजकुमार ने तुरन्त भेड़िये को मारने के लिये अपनी कमान निकाली और भेड़िये को तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "उसे मत मारो। वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार रुक गया उसने भेड़िये को नहीं मारा और अपने घोड़े से उतर पड़ा। उसने अपने घोड़े से बारहसिंगा उतारा और घर में चला गया।

भेड़िया घोड़े की देखभाल करने लगा और उसको इधर उधर घुमाने लगा। लोमड़ा घर के अन्दर की देखभाल करता रहा। इस तरह उनको फिर कुछ समय बीत गया।

लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी काफी बच जाता है। सो वह एक बार फिर बाहर गया और एक भालू को बुला लाया। भेड़िये को घास लाने के लिये भेज दिया गया। भालू को घोड़े की देखभाल करने के लिये रख दिया गया। और लोमड़ा घर की देखभाल करता रहा।

थोड़ी देर में ही राजकुमार घर आया तो भालू कूद कर घोड़े की देखभाल के लिये आगे बढ़ा तो राजकुमार ने अपनी कमान निकाल कर उसे तीर मारना चाहा तो लोमड़ा चिल्लाया — "इसे मत मारो यह तो एक दोस्त है।"

सो राजकुमार ने भालू को नहीं मारा। भालू ने फिर घोड़े की देखभाल की और उसको घुमाने ले गया। कुछ देर में भेड़िया घास ले कर आ गया। उसने घोड़े को घास खिलायी।

फिर कुछ समय बीत गया। लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी बहुत बच रहता है सो वह फिर बाहर गया और अबकी बार वह एक गरुड़ को घर ले आया।

उसने गरुड़ से कहा कि वह घोड़े की देखभाल करे भालू को घास लाने के लिये भेज दिया भेड़िये को जंगल से जलाने के लिये लकड़ी लाने के लिये भेज दिया और खुद वह उसके घर की देखभाल करता रहा।

इस तरह से अब सबके पास अपना अपना काम था। जब मालिक घर लौटा तो गरुड़ घोड़े की देखभाल के लिये उड़ा। राजकुमार उसको तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा चिल्लाया — उसको मत मारना वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार ने उसको मारा तो नहीं पर मन ही मन में सोचा "अबकी बार यह लोमड़ा पता नहीं किसको ले कर आयेगा। क्या मुझे सारे शिकार यहीं मिल जायेंगे।" इस तरह से वे फिर कुछ दिन तक रहते रहे।

एक बार लोमड़े ने मालिक से कहा — "हमको दो हफ्ते की छुट्टी चाहिये। दो हफ्ते बाद हम आपके पास लौट आयेंगे।"

मालिक ने सबको छुट्टी दे दी और अपने मन में सोचा "मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता अगर तुम लोग वापस न भी आओ तो। क्योंकि मुझे तुम सबसे बहुत डर लगता है।

इस तरह लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ सब राजकुमार से दो हफ्ते की छुट्टी ले कर चले गये। चलते चलते वे एक जंगल में एक खाली जगह जा पहुँचे जहाँ जा कर उन्होंने आराम किया।

लोमड़े ने अपने साथियों से कहा — "अब हमको अपने मालिक के लिये एक बहुत अच्छा घर बनाना चाहिये।" सो सब जानवर राजकुमार के लिये मकान बनाने में लग गये।

भेड़िये ने पेड़ काटे। भालू ने उस लकड़ी को जिस तरीके की शक्लों में काटना चाहिये था उस शक्ल में काटा और उनको जोड़ा। गरुड़ उनको ले कर गया। और लोमड़े ने उनको सबको बताया कि फिर क्या करना है।

जब लकड़ी तैयार हो गयी तब वे मकान बनाने के लिये तैयार हुए। उन्होंने इतना सुन्दर मकान बनाया कि उसके जैसा मकान राजकुमार सपने में भी नहीं सोच सकता था। मकान तो बन कर तैयार हो चुका था पर अभी उसमें कोई फर्नीचर नहीं था।

लोमड़ा उठा और अपने साथियों को ले कर पास के शहर में गया। वहॉ जा कर वे बाजार गये और घर के लिये फर्नीचर देखा। अब फिर हर एक के करने लिये एक काम था।

लोमड़े ने सामान चुना। भेड़िये ने शटर बनाने का आर्डर दिया। भालू ये सब सामान उठा कर दरवाजे तक ले गया और गरुड़ उनको महल में ले गया।

उन्होंने वह सब सामान खरीदा जो एक महल के लिये जरूरी था – घर के बरतन, कालीन, बड़े बड़े बरतन आदि आदि। वे सब चीज़ें उन्होंने महल में ले जा कर सजा दीं। अब वहॉ किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

दो हफ्ते गुजर चुके थे सो चारों घर गये। राजकुमार उस समय शिकार पर गया हुआ था पर वे उससे वहीं मिलने गये। उन्होंने जा कर उसको चारों तरफ से घेर लिया और उसको कहीं जाने न दें।

लोमड़ा ज़ोर से बोला — "हम तुम्हें हुकुम देते हैं कि तुम हमारे साथ आओ जिधर भी हम तुम्हें ले चलें।"

राजकुमार तो यह सुन कर डर गया। उसको यह पता ही नहीं था कि इस सबका क्या मतलब था। पर फिर भी उसको जाना पड़ा। थोड़ी ही देर में जब वे सब खुली जगह पहुँच गये। वह जगह एक दीवार से चारों तरफ से घिरी हुई थी जिसके पार कोई चिड़िया नहीं उड़ा सकती थी।

उन्होंने उसके फाटक खोले और उसके अन्दर गये। जब राजा के बेटे ने वह सब देखा तो वह तो आश्चर्य से भौंचक्का रह गया। दीवार के अन्दर बहुत ही सुन्दर बागीचा था जिसमें कई फव्वारे पानी बिखेर रहे थे। और उनके बीच खड़ा था एक बहुत सुन्दर महल।

यह दिखा कर वे बोले — "यह हम सबने मिल कर तुम्हारे लिये दो हफ्ते में बनाया है। अब तुम इस मकान में खुशी खुशी आराम से रहो।"

राजकुमार तो यह सब देख कर बहुत खुश हुआ और लोमड़े का दिल से धन्यवाद किया। वहाँ रहते रहते फिर कुछ समय बीत गया।

अब लोमड़ा बोला — "अब मुझे लगता है कि मालिक के लिये एक बहुत अच्छी सी पत्नी ढूँढ दूँ।"

सो वह राजकुमार के पास गया और उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी माँगी। राजकुमार ने तुरन्त ही उसको छुट्टी दे दी।

छुट्टी ले कर उसने एक स्ले[41] बनायी। उसने उसमें भालू और भेड़िया जोता और गरुड़ से कहा — "तुम बहुत ऊँचे ऊपर उड़ जाओ और जरा ध्यान से देखते रहो। जब तुमको कोई बहुत सुन्दर राजकुमारी मिल जाये तो उसको अपने पंजों में पकड़ कर यहाँ ले आना।" वह खुद उस स्ले में बैठ कर कोचवान का काम करने लगा। इस तरह से वे जगह जगह घूमते फिरे।

गाँवों में लोमड़े ने बिगुल बजाये भालू और भेड़िया कूदे और नाचे। उनका नाच कूद देखने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा हो गयी। जब वे राजधानी में आये तो वहाँ सूरज की तरह से सुन्दर एक बहुत सुन्दर लड़की आयी।

गरुड़ ने उसको देखा तो तुरन्त ही उसको अपने पंजों में दबोचा और उड़ चला। भालू और भेड़िये भी अपने घर को लौट चले।

---

[41] Sledge or sleigh is a wheelless carriage which is used normally in snow covered regions and is drawn by horses or reindeers – see its picture above.

जब लोगों ने देखा तो वे भी उनके पीछे पीछे चले। लोमड़ा अपने साथियों से पीछे था। कुत्ते उसके पीछे भागे चले आ रहे थे। वे तो उसका शाल पकड़ने ही वाले हो रहे थे कि किसी तरह से वे सब उस सुन्दर राजकुमारी को ले कर अपने मालिक के पास अपने घर आ गये।

राजकुमार तो यह देख कर खुशी के मारे उछल ही पड़ा। उसके तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

यह सब देख कर राजकुमारी का पिता बहुत गुस्सा था। उसने कहा — "जो कोई भी मेरी बेटी को ढूँढेगा और उसे मेरे पास वापस लायेगा मैं उसे अपना आधा राज्य दूँगा।" पर कोई उसका निशान भी नहीं पा सका।

आखिर एक बुढ़िया वहाँ आयी और बोली — "मैं अपकी बेटी को ढूँढ कर लाऊँगी।" कह कर वह उठी और चल दी।

आखिर वह राजकुमार के घर आयी और वहाँ आ कर पूछा — "क्या आपको कोई नौकरानी चाहिये। मैं बहुत कम पैसे में आपका काम कर दूँगी।"

लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ यहाँ तक कि राजकुमारी ने भी उसको यह कह दिया कि उनको उसकी जरूरत नहीं थी। पर राजकुमार उनसे राजी नहीं था। उसने उसको नौकर रख लिया।

बुढ़िया ने काफी दिनों तक उनकी बड़ी वफादारी से सेवा की और उनको किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होने दी।

एक दिन जब राजकुमार सोया हुआ था तो बुढ़िया ने राजकुमारी से उसके साथ बागीचे में जाने के लिये कहा।

राजकुमारी जाना नहीं चाहती थी पर बुढ़िया उससे जिद करती रही जब तक कि वह राजी नहीं हो गयी। सो दोनों बागीचे में घूमने आ गयीं। दोनों फव्वारे के पास आयीं तो बुढ़िया ने उसको पानी पीने को दिया। राजकुमारी ने मना किया तो उसने उससे पीने की जिद की।

उसने पानी का एक बड़ा सा बरतन राजकुमारी के होठों से लगा दिया। अचानक ही उसने राजकुमारी को निगल लिया। फिर बुढ़िया ने उसको अपने मुँह से लगाया तो उसने उसको भी निगल लिया। अब बरतन लुढ़क चला।

लोमड़ा यह सब देख रहा था। उसने उस बरतन का पीछा भी किया पर वह जल्दी ही उसकी ऑखों से ओझल हो गया। लोमड़ा तुरन्त अपने मालिक के पास गया पर अब उससे कुछ कहने का कोई फायदा नहीं था।

उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी मॉगी उसने फिर से अपनी पुरानी तरह की स्ले बनायी उसने फिर से भालू और भेड़िये को उसमें जोता और खुद फिर से कोचमैन की जगह पर बैठ कर चल दिया।

अबकी बार उसके पंजों में तम्बूरीन्स थी। वह उसको बजाता था और भालू और भेड़िया नाचते थे। गरुड़ ऊपर उड़ता हुआ इधर

उधर राजकुमारी को ढूँढ रहा था। उस देश में बहुत सारे लोग यह नजारा देखने के लिये घर से बाहर आ गये।

राजा अपनी बेटी से बहुत नाराज था। जब राजकुमारी ने बाहर जाना चाहा तो राजा ने उससे कहा — "नहीं बाहर मत जाओ। बल्कि बाहर देखना भी नहीं।"

गरुड़ बहुत देर तक इधर उधर देखता रहा। आखीर में उसने एक खिड़की में से राजकुमारी की एक छोटी सी झलक देख ली। बस वह उस खिड़की से जा कर टकराया और उसको तोड़ दिया। राजकुमारी को अपने पंजों में पकड़ा और उड़ चला।

वह अपने साथियों से जा कर मिल गया और वे सब घर की तरफ चल पड़े। वे राजकुमारी को अपने मालिक के पास ले आये। उधर राजा ने अपनी सेना इकट्ठी की और उस बुढ़िया के साथ राजकुमार के महल भेज दिया।

लोमड़े ने दूर से उनको एक मक्खियों के झुंड की तरह आते देखा तो उसने गरुड़ को आसमान में पत्थर ले जाने के लिये कहा और कहा कि जब सेना आ जाये तो वे पत्थर वह उन आदमियों के ऊपर फेंक दे। लोमड़ा भालू और भेड़िया उन पर अलग से हमला कर देंगे और उनको सबको मार देंगे। ऐसा ही हुआ।

केवल एक आदमी बचा सो वे उस पर भी टूट पड़े और उस पर अपना एक पंजा रख कर उससे कहा — "जाओ और जा कर अपने राजा को बता दो कि उसके आदमियों पर क्या बीती है।"

वह आदमी अपने राज्य चला गया। जब राजा ने अपने केवल एक आदमी को वापस आते देखा और अपनी सेना के मारे जाने के बारे में सुना तो वह दुख से पागल हो गया।

उसने अपने राज्य के सारे बड़े बड़े पादरियों को बुलाया और उनको ले कर राजकुमार के महल ले गया। वे आये और उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गये।

जब वे पास आये तो लोमड़े ने उनको देखा और अपने मालिक को बताया। राजकुमार उनसे मिलने के लिये दौड़ा गया और उनको उनके पैरों पर खड़ा किया। फिर वह उनको अपने घर में अन्दर ले गया। राजकुमारी का पिता और उनके दामाद ने फिर आपस में समझौता कर लिया और दोनों खुशी खुशी रहे।

लोमड़ा अपने मालिक से बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। मैं अब जल्दी ही मर जाऊँगा। आप मुझसे वायदा कीजिये कि आप मुझे एक मुर्गीखाने में दफ़नायेंगे।"

राजकुमार ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा जैसा कि उसने उससे करने के लिये कहा है।

लोमड़े ने सोचा "मैं देखता हूँ कि मेरे मालिक अपना वायदा निभाते हैं या नहीं।" और वह ऐसा पड़ गया जैसे कि वह मर गया हो। राजकुमार ने जब उसकी लाश देखी तो उसने हुकुम दिया कि उसको ले जा कर बाहर जमीन में गाड़ दें।

इस पर लोमड़ा बहुत गुस्सा हुआ। वह कूद पड़ा और ज़ोर से चिल्लाया — "मेरी अच्छाइयों को क्या आप इसी तरह से याद रखेंगे। अब क्योंकि आपने ऐसा कर दिया है तो जब मैं मरूँगा तब आप सब पर मेरा शाप पड़ेगा आप सबका नामोनिशान तक मिट जायेगा।"

इसके कुछ समय बाद लोमड़ा मर गया। इसके बाद उसके वे शब्द सच हुए। वे सब मर गये। बस केवल भेड़िया भालू और गरुड़ ही वहाँ के मालिक रहे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**